भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 11 | उदयपुर गुरूवार 15 जून 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

पीतल से पीतलिया सेठ के नाम पीतलिया गोत्र

संदर्भ : पीतलियों के बही भाट बड़वाजी बाबूलाल (47) पिता बादरमल (85) गांव सिंहपुरा, पो. गलवा, वाया कोशीथल, जिला भीलवाड़ा से दिनांक 20 सितम्बर 2005 तथा 02 जनवरी 2006 को उदयपुर में गोकुलचन्दजी पीतलिया के निवास पर पीतलिया गोत्र के बारे में जानकारी प्राप्त की गई। इसका पहलीबार उल्लेख डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा सम्पादित 'गोकुल गौरव' नामक अभिनन्दन ग्रंथ में किया गया जिसका प्रकाशन फरवरी 2006 में हुआ।

महाराणा कुंभा (संवत् 1490-1525) के शासनकाल में नरसिंहदासजी के वंशज कोचरजी राजदरबार में धनरक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका के कारण धनरेचा कहलाये । महाराणा के विश्वासपात्र एवं सलाहकार होने के कारण जहाँ इनका बड़ा प्रभुत्व था वहीं अन्यों के लिए वे ईर्ष्या के पात्र भी थे। मुगलों की घेराबंदी के कारण कुंभलगढ़ से जुड़े सारे मार्ग बंद हो चुके थे। इससे युद्धोपयोगी आवश्यक सामग्री जबर्दस्त रूप से प्रभावित हुई।

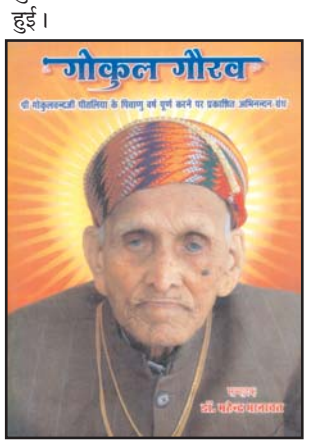

मुख्य रूप से तोप के गोलों के लिए पीतल की आवश्यकता की ओर राणा का ध्यान गया। कोचरजी का परिवार पीतल का सामान्य व्यापार करता था किन्तु ईर्ष्यावश लोगों ने मौके का फायदा उठाकर कोचरजी का नाम प्रस्तावित कर दिया और महाराणा से कहा कि संकट की घड़ी में समर्थ होते हुए भी धन के प्रलोभन के कारण कोचरजी पीतल नहीं देंगे।

यह सुन राणा ने कोचरजी को आदेश दिया कि वे तीन दिन में आवश्यकतानुसार पीतल की व्यवस्था करें। कोचरजी सारी स्थिति को भांप चुके थे। उनके लिए यह जीवन-मरण की घड़ी थी। वे जानते थे कि महाराणा भी उनसे द्वेष रखने वाले लोगों की बातों में आकर उनकी परीक्षा लेने को उद्यत हुए हैं।

यदि इसमें वे सफल नहीं हो पाये तो महाराणा की निगाहों से तो उतरेंगे ही, विरोधियों का कथन भी सत्य साबित हो जायेगा जिससे वे उनके लिए भी हँसी के पात्र बन जायेंगे । जब व्यक्ति सब ओर से निराश, असहाय और निरुपाय हो जाता है तो वह देवी- देवता की शरण पकड़ता है। धनरेचाजी ने माँ अम्बा की शरण पकड़ी और निरन्तर तीन दिन तक माता की सेवा-पूजा आराधना में खो गये।

कहते हैं, भक्ति कभी निष्फल नहीं जाती । धनरेचाजी की शुद्ध मन से अटूट आस्था और सर्वस्व समर्पण की साधना रंग लाई। तीसरे दिन की रात्रि में माता की प्रतिमा से अचानक एक देव-महिला का चमत्कारपूर्ण प्रगटीकरण देख कोचरजी चकित हो गये।

वह महिला बोली - 'तेरी आस्था, समर्पण, ध्येय, निष्ठा से मैं प्रसन्न हूँ । संकट की इस घड़ी में मैं तुम्हारी सहायता करने आई हूँ । एक लोठा शुद्ध जल से भरा लाकर उसमें रुई का दीपक प्रज्वलित करो। मैं सुबह होते-होते फिर आऊँगी।' कोचरजी तत्काल उठे। शुद्ध पानी भरा लोठा लाये और उसमें रूई का दीपक प्रज्वलित कर दिया ।

लोठे में तेल विहीन दीपक रातभर जलता रहा। रोशनी ऐसी मधुरिम- मधुरिम थी जैसी पहले कभी नहीं देखी गई। वह देव-दीपक ही था। देव-रोशनी ही थी । कोचरजी का आत्मानंद रोशनी की तरह ही प्रकाशमान था। अगली सुबह देवी प्रकट हुई। देवी माँ के सम्मुख कोचरजी श्रद्धाभिभूत अभिवंदन किये खड़े हो गये। वह बोली - ' दरबार में जाकर राणाजी को मनचाही पीतल ले जाने के लिए आमंत्रित करो। विनयपूर्वक यह अवश्य कह देना कि जितनी पीतल चाहिए, आज ही के दिन प्राप्त कर ली जाय।

- शेष पृष्ठ सात पर

सूचना

डॉ. भानावत परिवार का नया निवास 352, श्रीकृष्णपुरा की बजाय फ्लैट नं. 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, मुनि सुव्रतस्वामी जैन मंदिर परिसर, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर है।

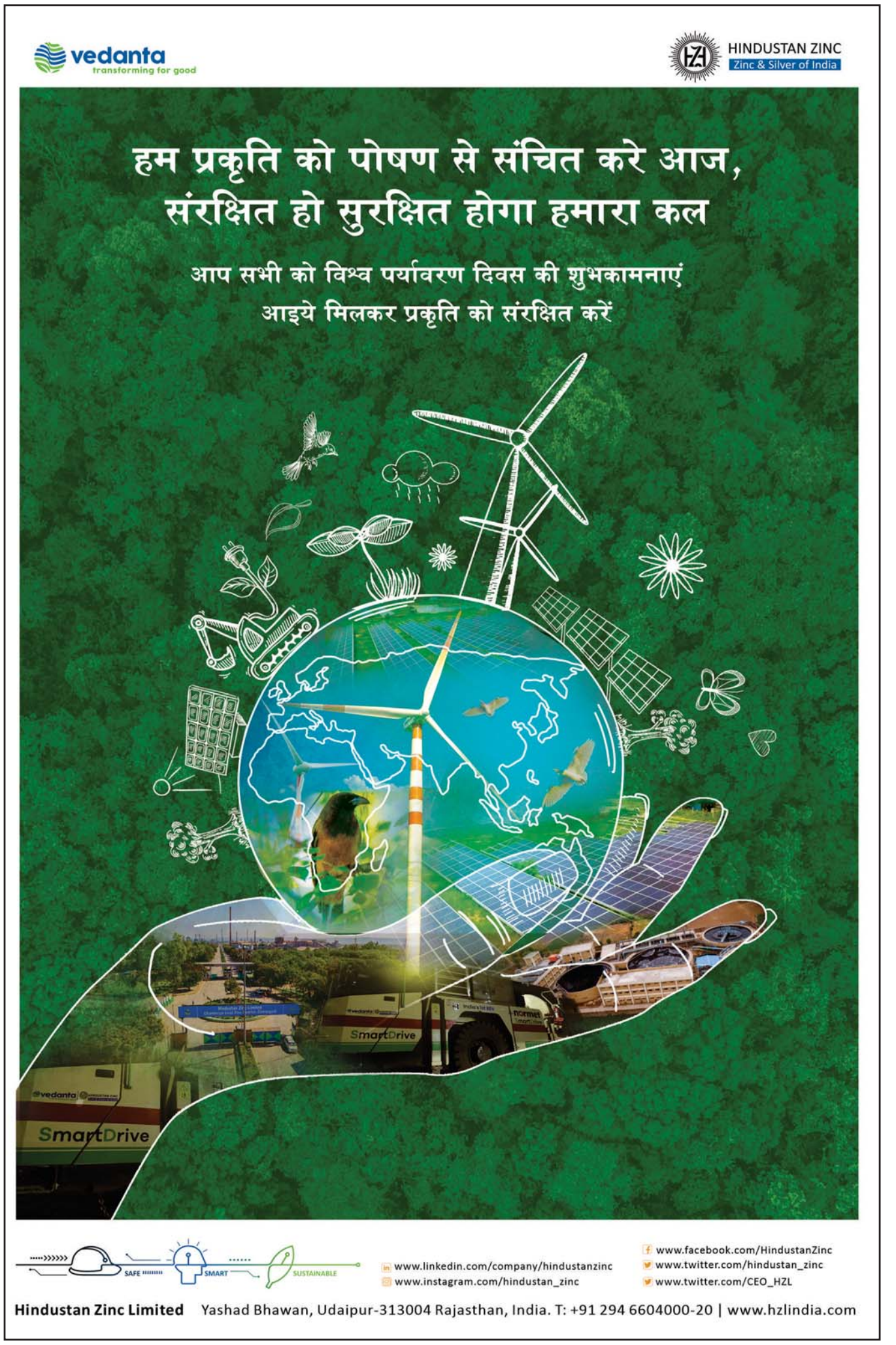

पोथीखाना

रंगायन का रंग संयोजन

'रंगायन' नामक इस पत्रिका में 8 लेख तो लोकगाथा पर ही हैं पर सबसे अच्छा विश्लेषण सत्यदेव त्रिपाठी ने बड़े मनोयोग से शोधपरक दृष्टि-चैतन्य से किया है जिससे विज्ञ पाठकों को गम्भीर किन्तु सटीक जानकारी मिलती है। उन्होंने लोक, फोक से लेकर विविध लोक, लोक और शिष्ट वर्ग में प्रचलित मास और क्लास, त्रिलोक को समझाते लोकगाथा का फोक टेल और लोककथा का फोकस्टोरी नामकरण के चलन पर बड़ी मीठी चुटकी लेते कलखा कि अखबारों में आर्टिकल के लिए स्टोरी चल पड़ा। छपी है रपट पर कहेंगे स्टोरी। स्टोरी में नोट, टिप्पणी, रिपोर्ट, बयान, स्टेटमेन्ट, घटना आदि सबकुछ आ जाता है। (पृ. 4)

इसी क्रम में त्रिपाठीजी ने गाथा की उत्पत्ति, व्याप्ति, विलुप्ति ; विधान विशेषताएं, गायक जादूगर काका, भरथरी गीत, आल्हा गायन, बिरहा गायन जैसे उप शीर्षकों में 21 पृष्ठीय आलेख कुछ कागद लेखी : कुछ आंखन देखी शीर्षक से लिखा जो अपनी समग्रता में श्रेष्ठ बन पड़ा है।

संग्रहालय पर तीन लेख हैं जो पुख्ती जानकारी देते हैं। श्री नटवर त्रिपाठी का लिखा फड़ चित्रकारी लेख लगता है लिखा ही इसीलिए कि उन्हें यह स्थापना करनी थी कि फड़ चित्रकारी का जन्मस्थल चित्तौड़ दुर्ग है। अब तक जिन-जिन ने लिखा और फड़ चित्रांकन करने वालों ने भी चित्तौड़ को श्रेय नहीं दिया।

फड़ पर तो आज से 50 वर्ष पूर्व विदेशियों ने यहां आकर गांव-गांव भ्रमण कर वाचक भोपे-भोपियों तथा चितेरे जोशियों से सम्पर्क कर उनसे जानकारी लेकर जो काम किया और प्रकाशन दिया वही अद्‌भुत है।

फिर इन सभी कलाओं के मुख्य प्रेरक तथा लेखक देवीलाल सामर ने पड़ कला पर सबसे पहले अधिकृत लिखा। लोककलाविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत ने तो पूरे राजस्थान का भ्रमण कर इस कला पर बहुत लिखा। उनकी पहली पुस्तक 'रामदला की पड़' सन् 1968 में भारतीय लोककला मण्डल से छपी फिर पाबूजी की पड़ सन् 2000 में भोपाल की आदिवासी लोककला परिषद से निकली।

आश्चर्य है कि जिन श्रीलाल जोशी से देश-विदेश के सभी विद्वानों ने सम्पर्क कर पड़ कला पर लिखा। रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत को तो डॉ. भानावत ने श्रीलालजी से मिलाया। श्रीलालजी ने पड़कला पर सर्वाधिक प्रयोग कर विदेशों के कई संग्रहालयों की शोभा बढ़ाई।

भारतीय लोककला मण्डल के नये भवन में उन्होंने ही सबसे पहले दीवाल पर देवनारायण की पड़ चित्रित की। उन श्रीलालजी का और अन्य लेखकों में किसी का उल्लेख तक त्रिपाठीजी ने नहीं किया और सबसे भिन्न अब जाकर उसका उद्‌भव चित्तौड़ से मानकर दलील कुछ नहीं दी। पड़ के वर्तमान में भीलवाड़ा के शाहपुरा में जो भी असली जोशी परिवार हैं उन तक का उल्लेख नहीं किया।

श्रीलालजी के पुत्र ने भी बाद में इस कला को न केवल जन-जन तक पहुंचाया बल्कि कइयों को प्रशिक्षण देकर कई संगोष्ठियां भी आयोजित कीं जिनमें डॉ. महेन्द्र भानावत तथा चित्रकार चित्रसेन ने भी उदयपुर से भाग लिया। भीलवाड़ा स्टेशन पर भी इस कला का अंकन कर भीलवाड़ा को विशिष्ट पहचान ही दी।

इस अंक में मात्र एक लेख अंग्रेजी में डॉ. एच. एस. चंडालिया का गलालेंग गाथा पर है। वागड़ प्रदेश की यह गाथा जोगी कलाकार इकतारा पर गाते हैं।

डॉ. चंडालिया ने यह लेख शोध के गहरे विश्लेषण के साथ लिखा है। उनके अनुसार गलालेंग नाम गुलाबसिंह का आंचलिक नाम था। वागड़ी बोली में गुलाल 'गलाल' और सिंह, हिंग-हेंग बोला जाता है। दोनों को मिलाकर संयुक्त नाम गलालेंग हो गया। गुलाबसिंह ऐतिहासिक व्यक्ति रहा जिसका उल्लेख प्रसिद्ध ग्रन्थ वीर विनोद में भी है। इसका समय 1653-98 तक का है।

लोक में प्रचलित गलालेंग मौखिक गाथा होने के कारण इसके विभिन्न रूप मिलते हैं। कहा जाता है कि जयसमन्द नामक झील जो बनावटी झीलों में एशिया की सबसे बड़ी झील है उसका प्रारम्भिक नाम ढेबर था। लाख कोशिश करने पर भी जयसमंद की पाल नहीं बन पा रही थी तब ढेबर नामक व्यक्ति का बलिदान दिया गया। इस कारण उसका नाम ही ढेबर पड़ गया। इस झील में 9 नदियां तथा 99 वेरे, छोटे-मोटे नाले गिरकर पानी से भरते हैं।

डॉ. चंडालिया ने गलालेंग गाथा की प्रस्तुति, कलाकार दल, उनके सामाजिक परिवेश, प्रस्तुति ढंग आदि पर अच्छा प्रकाश डाला है। स्मरण रहे गलालेंग पर पहलीबार सम्पादित कृति के प्रकाशन का श्रेय प्रो. भगवतीलाल शर्मा को है जो तब डूंगरपुर कॉलेज में हिन्दी के प्राध्यापक थे। रंगायन का यह अंक वर्ष एक अंक दो, 2022 का है। इसके सम्पादक डॉ. लईक हुसैन हैं। पृष्ठ 172 के इस अंक की कीमत 50 रूपया है। - **डॉ. तुक्तक भानावत**

यूं ही बस चुप रहो

'यूं ही बस चुप रहो' समर्थ कवि डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव' की गम्भीर वैचारिक एवं दार्शनिक कविताओं का संग्रह है। डॉ. भाटी को भावुकता और संवेदना की गम्भीर पहचान है। कृति में जीवन की अनुभूतियों के भाव-चित्र हैं। ये कविताएं जीवन का संगीत हैं। अनन्त यात्रा की ध्वनियां भी इन कविताओं में सुनाई देती हैं। मौत की आहट कैसी होती है, उसके पदचापों को भोगने वाला ही अनुभव कर सकता है।

एक बेचैनी, छटपटाहट इन कविताओं में मिलती है। मृत्यु-शैय्या पर पड़े अपने प्रिय की छटपटाहट व अनन्त यात्रा पर उसके प्रस्थान का बांध बहुत ही मारक होता है। वह कुछ नहीं कर पाता। सिफ असहाय नैत्रों में अश्रु भर कर देखते रहना उसकी नियति है। वह आशा-निराशा के बोध से दूर एक अलग ही भाव जगत में पहुंच जाता है। स्पष्ट है कि सभी कविताएं एक बेचैनी हैं। कवि अपने परिवेश में जीता और संघर्ष करता है। 'यूं ही चुप रहो' की कविताएं स्पष्ट करती हैं कि कवि अन्तर्संघर्ष में जी रहा है। चुप रहना शक्ति देता है। मौन की मारक क्षमता बहुत होती है। यह कमजोर व्यक्ति की नहीं अपितु शक्तिशाली व प्रबल जिजीविषा वाले व्यक्ति की पहचान है। हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर से प्रकाशित 108 पृष्ठीय इस कृति का मूल्य 390 रूपया है। - **डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना**

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य

जैन जगत के अन्तिम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की वाणी को अनेक आचार्यों, सन्तों तथा विद्वानों ने जन-जन तक पहुंचाने का भगीरथ कार्य किया है उनमें पूर्णतल्ल गच्छ के हेमचन्द्राचार्य ने जो साहित्य सर्जन किया है उस पर विभिनन गच्छों, सम्प्रदायों तथा जैनेतर विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोण से जो कार्य किया है वह अतुलनीय ही है।

लेखक उपाध्याय मनितप्रभसागर ने प्रस्तुत 'कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य' को श्रेष्ठ साहित्य सर्जक बताते लिखा कि एक तरह उन्होंने अभिधान चिन्तामणि, अनेकार्थ संग्रह आदि चार शब्दकोष रचे, दूसरी तरफ सिद्ध हेम, लिंगानुशासनम् आदि व्याकरण ग्रन्थ भी रचे।

संस्कृत प्राकृत भाषीय सिद्धान्तों के प्रायोगिक पक्ष को उजागर करने के लिए दो द्वयाश्रय महाकाव्य प्रस्तुत किये तो जैन प्रमाण का व्याख्यात्मक प्रमाण मीमांसा नामक ग्रन्थ लिखा। त्रिषष्ठिशलाका पुरुष चरित्र एवं परिशिष्ट

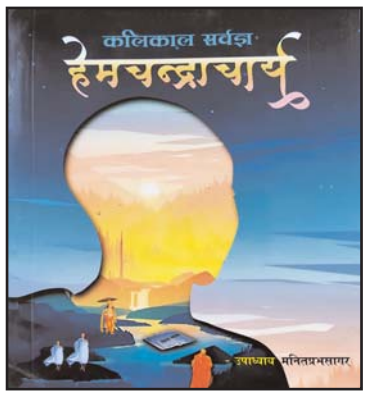

पर्व में जैनधर्म की ऐतिहासिकता को परोसकर सृजनशीलता का उत्कृष्ट परिचय दिया तो श्रावक जीवन के कर्त्तव्यों से परिपूर्ण योगशास्त्र एवं भगवद् भक्ति स्वरूप वीतराग स्तोत्र का निर्माण किया। (पृ. IX)

प्रस्तुत ग्रन्थ द्वादश उल्लास के 194 पृष्ठों में आचार्य हेमचन्द्र के समय, उनके द्वारा रचित विविध साहित्य तथा उनके सम्पर्क में आये विशिष्ट व्यक्तित्व एवं विचारों का सारतत्व मंथन प्रस्तुत कर न केवल विद्वानों अपितु सामान्य पाठकों को भी अमृत लाभ प्रदान किया है।

इस ग्रन्थ की जनप्रियता का अनुमान तो इसी से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2022 में ही इसके दो संस्करण दो तथा एक हजार प्रतियों के प्रकाशित हुए।

आचार्यश्री जिनक्रान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाजमन्दिर, मांडवला (जालोर राज.) से प्रकाशित यह ग्रन्थ मात्र 100 रूपये में उपलब्ध है। जहाजमन्दिर के संपर्क नं. 9649640451 हैं।

- **डॉ. तुक्तक भानावत**

पत्रों के आलोक में (7)

श्रीलाल जोशी, भीलवाड़ा के पत्र

पड़ बनाने वाले जोशी चितेरे पड़ के साथ-साथ दीवालों पर चित्राम कोरने के भी ख्यात कलाकार होते हैं। इन चितेरों ने पड़ बनाना क्यों, कैसे छोड़ा और फिर कैसे हमने उनसे मेलमिलाप करते यह कार्य प्रारम्भ कराया, यह सब कथा-प्रसंग मैं अपने द्वारा लिखित 'पाबूजी की पड़' पुस्तक में लिख चुका हूं। इसका प्रकाशन जनजातीय लोककला परिषद एवं वाणी अकादमी, भोपाल से सन् 2000 में हुआ।

भीलवाड़ा के श्रीलाल जोशी को जब मैंने गणगौर सम्बन्धी जानकारी हेतु कुछ प्रश्न लिख भेजे तो उन्होंने जानकारी भेजी उसे भी यहां दी जा रही है।

श्रीलालजी अधिकत: चित्र कोराई का ही काम करते। चित्रों में कपड़े पर, कागज पर या फिर दीवाल पर उन्होंने सर्वाधिक चित्र बनाये और सर्वाधिक यश प्राप्त किया। उन्हें कई पुरस्कारों के साथ 'पद्मश्री' की उपाधि मिली। विदेशों का भी खूब भ्रमण किया। भारत सरकार ने उनके द्वारा निर्मित देवनारायण की पड़ का एक पांच रूपये का डाक टिकिट भी जारी किया जो उन्होंने प्रथम दिवस आवरण के साथ 02 सितम्बर 1992 को मुझे भेजा।

जोशी कलाकुंज भीलवाड़ा से भेजे मेरे नाम कुछ पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं। उनमें से दो-चार पत्रों का जिक्र आवश्यक समझ रहा हूं।

अपने 19 नवम्बर 1977 के पत्र में लिखा- 'श्रीमान का पत्र व पुस्तक 'गणगौर' की प्राप्त हो गई है। भारतीय लोककला मण्डल व आपकी तो मेरे पर हर समय कृपा बनी ही रही है। अपनी तरफ से तो मुझ पर कई अहसान इकट्ठे हो गये हैं। मैं यह ऋण उतारने के योग्य कहां। आपकी लेखनी द्वारा मेरे नाम को उजागर करने में आपका योग अविस्मरणीय है।'

03 मई 1978 के पत्र का यह अंश- आपने व कलामण्डल ने तो मेरे बारे में इतना किया है कि मैं आपका बहोत आभारी हूं। मेरे पर इतना भार चढ़ा दिया है कि मैं आपके इस ऋण से कभी मुक्त नहीं हो सकता। यह सब जो यश, प्रतिष्ठा मिली है, उसका सारा श्रेय आपको व पूज्य बाबा सा. (देवीलाल सामर, कलामण्डल के संस्थापक-संचालक) को है। मैं इन अहसानों को कभी भूल नहीं सकता।

एक पत्र 13 फरवरी 1983 का लिखा है जिसमें उन्होंने गणगौर सम्बन्धी मेरे द्वारा चाही गई जानकारी सुलभ कराई है जो यहां दी जा रही है। इसके साथ उन्होंने कुछ रेखाचित्र भी भेजे हैं। यथा-

(1) गणगौर के मस्तिष्क पर इसे सेवरा कहते हैं। यह मिट्‌टी का पोलासिया कुम्हार द्वारा बनाया जाता है। इसमें ज्वारे बोये जाते हैं। होलिका दहन के दूसरे रोज चैत्र कृष्णा बीज प्रात: कुंवारी बच्चियां होलिका के स्थान पर जाती हैं। उसमें से अधजली राख, गोबर के बने बडुल्लों की माला बनाकर जलाने से पहले होलिका पर चढ़ाती हैं। होली की उस राख को गणगौर के स्थान पर ले जाकर उसमें जव के साथ थोड़ी पीली मिट्‌टी मिलाते, पानी मिश्रित कर लड्‌डू की आकृति लिए सौलह पिंडियां बना मिट्‌टी के किसी पात्र में रख प्रतिदिन जल सींचन करने से जौ से दानें जिन्हें ज्वारा कहते हैं, उग आते हैं।

उल्लेखनीय है कि जौ को ब्रह्मा का प्रतीक माना गया है। प्रसिद्धि है कि सृष्टि की रचना में वनस्पतियों में सबसे पहले जौ की फसल विकसित हुई। कारण कि दो-तीन दिन में ही इसका अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है। पूजन-हवन में भी इसीलिए जौ ही अर्पित किये जाते हैं। लोकधारणा है कि सफेद या हरे रंग के ज्वारे बहुत ही शुभ माने जाते हैं। आधे हरे-पीले ज्वारे से तात्पर्य वर्ष में आधा समय ही ठीक रहने से है। लड़कियां अपने ज्वारे देखकर अपना भविष्य निकाल लेती हैं।

यह स्थान पास के किसी बागबगीचे या हरे खुले स्थान, बाड़ी में होता है। वहां प्रतिदिन सब लड़कियां मिलकर पानी का छींटा देती हैं और गीत गाती हैं। एक-एक छींटे के साथ एक-एक गीत और मुट्‌ठी में लिया जौ, गेहूं या मक्का के किसी एक दाने को गीत पूरा होने पर चढ़ाती जाती हैं। ऐसे कर रोज सौलह गीत, सौलह छींटा पानी और सौलह धान के दानें गणगौर को धूप के साथ चढ़ाती हैं।

चैत्र कृष्णा एकम से चैत्र शुक्ला तीज तक यह पूजा चलती रहती है। इसके पीछे का भाव यह है कि लड़कियों को मनचाहा अच्छा पति मिले। लड़कियां अन्तिम दिन लोठे में पुष्प-दूब आदि सजाकर पूजा करना करती हैं जिसे सेवरा पूजना कहते हैं।

प्रथम पूजा लड़कियां करती हैं। उनके पश्चात दोपहर में महिलाएं पूजा करती हैं। उनके ज्वारे अलग होते हैं। विधवाओं के लिए गणगौर पूजा वर्जित है। सधवा औरतें संयुक्त रूप में पूजानुष्ठान करती हैं। इस दिन व्रत रखती हैं। पूजा के बाद ही व्रत खोलकर भोजन लेती हैं।

महिलाएं अपने-अपने पूजा थाल सजाती हैं। इसमें मेंहदी, काजल, लच्छा, टीली तथा हल्दी मिश्रित आटे से गणगौर माता के पहनने के छोटे-छोटे सौलह जेवर बनाये जाकर अच्छे वस्त्राभूषणों से सज्जित समूह रूप में महिलाएं गणगौर स्थल पहुंचती हैं। वहां एक बुजुर्ग महिला गणगौर की कहानी सुनाती है। अन्य सभी हुंकारा देती पूजा कर गणगौर को जल पिलाने के बहाने जल का छींटा दिए समूहगीत के साथ घर लौटती हैं और व्रत पूरकर बड़ी-बूढ़ियों से रामासामी करती उनके पांव स्पर्श कर सौभाग्यवती बने रहने का आशीष लेती हैं।

(2) गणगौर के चंवर उड़ाती दासी विजया तथा दूसरी और हुक्का पी रहे ईसरजी (शंकर भगवान) हैं। उनके माथे पर जटा में से गंगा बह रही है।

(3) दासी के नीचे सिंह है जो पार्वती का वाहन है। ईसरजी के नीचे शंकर भगवान का वाहन वृषभराज (नंदिया) है। गणगौर के अन्य नाम गौरी, गौरजा, पार्वती हैं।

(4) जहां-जहां गणगौर पूजी जाती है, उस स्थान की दीवाल पर यह चितराम बनाया जाता है जो साल भर रहता है। अगली गणगौर पर दीवाल की पुताई कर नया चितराम बनाया जाता है। यह विविध रंगों का होता है। जहां हम नहीं पहुंच पाते वहां कागज पर बनाकर दीवाल पर चिपका दिया जाता है। इसे पाठा कहते हैं। दीवाल-पाठे पर गणगौर की सवारी के चितराम भी कहीं-कहीं बनवाये जाते रहे हैं।

छोटे गांवों में एक ही स्थान पर गणगौर पूजी जाती है। ठिकाना न हो तो रावले में बनाई जाती है। वहां सभी औरतें पूजने जाती हैं। कहानी कहती हैं और पूजा कर लौटते समय बधावे गाती हैं। कई गांवों में लकड़ी की बनी गणगौर और कई जगह मिट्‌टी की बनी गणगौर पूजी जाती हैं। लकड़ी की गणगौर बसी के सुथारों द्वारा बनाई जाती है। मेरे परिवार के लोग शाहपुरा, चित्तौड़, भीलवाड़ा और रायपुर में ऐसे ही चित्र कोरते हैं। - **म. भा.**

स्मृतियों के शिखर (166) : डॉ. महेन्द्र भानावत

परम्परा से परिक्रमा द्वारा परमेश्वर की परिदर्शना

परिक्रमा से तात्पर्य किसी देवस्थल, देवप्रतिमा अथवा तीर्थ के चारों ओर घूमते हुए वंदन तथा नमनपूर्वक आस्था एवं श्रद्धा की अभिव्यक्ति करना है। यही प्रदक्षिणा भी है। इसमें उस स्थल विशेष तक पहुंचने का भाव मुख्य है जो यात्रा अथवा जात्रा नाम से जाना जाता है। यह यात्रा अथवा जात्रा जो मानव करता है उसे यात्री याकि जात्री कहते हैं। इसमें पुरुष, महिला, बच्चे सभी सम्मिलित होते हैं।

यात्रा-परिक्रमा से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। पुण्य की प्राप्ति के साथ अगला जन्म सार्थक हुआ समझा जाता है। सबसे बड़ा आत्मसंतोष मिलता है। वह पंक्ति भी है- 'जब आवे संतोष धन, सब धन धूलि समान।' जीवन जीने के लिए सकारात्मक सोच, स्वस्थ तन-मन, निरोग काया के साथ परिवार की ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि का भाव बना रहता है। इन सारे फेरों-परिक्रमाओं के ठेठ मूल में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष देवभाव ही भणित होता है। चाहें तो इन्हें भाव-परिक्रमा अथवा भावना-परिक्रमा कह सकते हैं।

यह सच है कि पोथियों में लिखित यात्रा-परिक्रमा-प्रदक्षिणा के कायदे कानून, फल प्राप्ति की महिमा के बखान जुदा-जुदा हैं। पंचकोसी से लेकर सप्त कोसी, दस कोसी, चौरासी कोसी तक की यात्रा का अनवरत सिलसिला है। सामान्य जन तो एक या तीन बार की परिक्रमा कर ही संतोष कर लेते हैं। यदि किसी देवता के पीछे परिक्रमा-पथ ही नहीं है तो प्रतिमा के समक्ष ही गोल-गोल घूमकर परिक्रमा पूरी हुई समझ ली जाती है। यह तो सभी मानते हैं कि परिक्रमा घड़ी के कांटे की तरह दांए हाथ की ओर से की जानी चाहिए।

जानकारों का कहना है कि ऐंडीवेंडी मनमाफिक परिक्रमा लाभ नहीं करती है। परिक्रमा करने के नियमों के अनुसार हनुमानजी की तीन बार, सूरज भगवान की सात बार, गजानंदजी सहित सभी अवतारों की चार बार, दुर्गा की एक बार और शिवजी की तो मात्र आधी ही परिक्रमा करनी चाहिये।

तीर्थयात्रा पर जानेवाले संगठित होकर जाते हैं। सबका साथ एक संग बन जाता है। संगवाला यात्री संगेती कहलाता है। वे बाद में जीवन भर ही संगेती भाई अथवा बहिन के रूप में अपना रिश्ता-व्यवहार निभाते हैं। पहले जब जाने वालों से सम्पर्क के कोई साधन नहीं थे तब वे पथवारी पूजा कर निकलते थे। यह पथ-रक्षिका देवी की प्रतीक मानी जाती है।

सकुशल यात्रा से लौटने पर पथवारी का पूजन किया जाता है। संस्कारपूर्वक लौटनेवालों का ग्राम्यजन तथा सगे समधी एकत्र होकर पथवारी की प्रतीक गंगामाई की जै बोलते उन्हें गाजेबाजे के साथ लिवालाते हैं। यह यात्रा मुख्यत: गंगाजी की होती है। यात्रीगण अपने साथ अपने पितर-पूर्वज के सुरक्षित किये फूल लेजाकर विशेष धार्मिक अनुष्ठान द्वारा पानी में विसर्जित करते। इससे मृतक की आत्मा को शांति मिलती है।

पथवारी गंगा की प्रतीक है। यात्री जब गंगाजी से लौटता है तो अपने साथ वहां से डांगड़ी (लकड़ी), गंगा-जल तथा कावड़ (कडिया़) लाता है। डांगड़ी के साथ-साथ वहीं से गंगाभेरू को निमंत्रित कर आता है जिसकी पूजा पथवारी के साथ सिन्दूर पन्नी लगाकर की जाती है। यह भेरू पथवारी के नीचे मध्य में एक आलिये में प्रतिष्ठित कर दिया जाता है। पत्थर के रूप में इसके दोनों ओर काला-गोरा भेरू, इसके ऊपर की ओर कावडिया़ वीर तथा गंगोज के कलश कोराये मिलते हैं।

इनके बीच दीपक का स्थान होता है। पथवारी गांव के बाहर बनी हुई होती है। यह अमूमन दो-तीन फीट चौड़ी और तीन-चार फीट ऊंची होती है। इसके ऊपर कंगूरे बने होते हैं। अलग-अलग जातियों की अलग-अलग पथवारी होती है। तीर्थयात्री इसकी पुताई आदि कराकर इसपर सुन्दर कलात्मक चित्र चित्रित करवाते हैं। यह रात 'डांगड़ी रात' कहलाती है। यह डांगड़ी (लकड़ी) भेरूगोटे की प्रतीक समझी जाती है। यह तीर्थयात्रा शादी के साथ भी सम्मिलित करली जाती है। ऐसी स्थिति में घर में बालबच्चे की शादी के पूर्व यह यात्रा की जाती है और वहां से लौटने पर गंगोज भरने की रस्म अदाई जाती है।

राजस्थान के मेवाड़ का क्षेत्र मगरे-मगरी, घाटे-घाटी और पहाड़ों-पर्वतों का क्षेत्र रहा है। सरपरट और सीधे रास्तों का यह अंचल कभी नहीं रहा। उदयपुर के आसपास ही अगणित घाटे-घाटियाँ तथा मगरे-मगरिया हैं। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण इण्या मगरा (पहाड़) है जो कई कारणों से बहुचर्चित नहीं हो पाया। छह हजार बीघा में फैला यह पहाड़ उदयपुर के दक्षिण-पश्चिम में है।

उदयपुर से तेरह किलोमीटर दूर नांदेश्वर से यह प्रारंभ होता है जो चौकडिया़, छोटी ऊंदरी, बड़ी ऊंदरी, डागल तथा खरपीणा गाँव तक पंद्रह किलोमीटर की लम्बाई नापता पीछे की ओर मुड़ाव खाता हुआ रमणी घाटी, गारिया नाल, आमदरी, फाटादरा, लेथ, झरणा महोदव, नवा खेड़ा, गेरीवाला महादेव तथा नोरा गाँव को छूता है। कुल मिलाकर तीस किलोमीटर की परिधि लिये यह पहाड़ अपने ऐतिहासिक अजूबेपन में महत्त्वपूर्ण बना हुआ है।

बड़ी ऊंदरी के ऊदा पारगी एक सौ से अधिक वर्ष की स्मृतियाँ संजोये हुए हैं। केवल कुछ ऊँचा सुनते हैं। उन्होंने बताया कि इण्या पहाड़ पर पांडवों ने तपस्या की। पांडवों के गुरू द्रोणाचार्य की धूणी भी वहीं है। उस धूणी पर धीरे-धीरे माटी की परत जम गई है। उसे खंगालने पर राख ही राख मिलती है। इसी के पास एक संत ने तपस्या की जिसकी त्रिशूल रोपी हुई है।

पथवारी

धूणे के पास ही मगरा बाबा का स्थान है। किसी समय यह स्थान सघन वृक्ष से आच्छादित था। इसके पास ही पानी से सराबोर कुंड था। तब पूरा पहाड़ विभिन्न प्रकार के वृक्षों तथा जड़ी-बूटियों से खुशनुमा बना हुआ था। पक्षियों का कलरव तथा जंगली जानवरों का बसेरा एक नई रौनक देता था लेकिन आज लगता है सब कुछ उजड़ गया है और पुरानी बातें अविश्वसनीय लगती हैं।

बड़ी ऊंदरी के नाथू डूंगरी ने इण्या को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि सुमेर ढाकणिया और काइला जैसे नामी पहाड़ों के साथ इण्या का नाम चला आ रहा है। इस पहाड़ पर पांडवों के बाद कई संतों ने तपस्या की। पानी की तब बड़ी इफराद थी लेकिन कुंड में एक औरत ने स्नानकर उसका पानी गंदा कर दिया। संत ने तब उस कुंड पर अपना खप्पर डाला और शिला खिसका दी। इससे कुंड में पानी की एक बूंद भी नहीं रही पर उस खप्पर का यह चमत्कार रहा कि वह पास के नांदेश्वर जा प्रकट हुआ जहाँ पानी-ही-पानी होगया। कितना ही अकाल पड़े वहाँ की धारा सदैव एक सी बहती रहती है। नाथूजी ने कहा कि चमत्कार को पूरी दुनिया नमन करती है। यों इण्या पर पानी की एक बूंद नजर नहीं आती पर वहाँ पक्षी कभी बिना पानी नहीं रहे। नांदेश्वर में खलकी गंगा अदीठ में इण्या की ही गंगा है।

मगरा बाबा के प्रति आदिवासी लोगों की बड़ी आस्था और अटूट विश्वास है। इण्या बाबा लोकजीवन में मगरा बा, मगरा बाबा, इण्या बाबसी के नाम से भी बहुप्रसिद्ध हैं। एक-दो जगह बातचीत में लोगों से इनका द्रोणा बाबा नाम भी सुनने को मिला। मंगला पारगी ने इण्या पहाड़ पर देखे-सुने वृक्षों के नाम गिनाते हुए बताया कि कडैया़, धामड़ा, खरण्या, कोकर, केमड़ो, उंड्यो, कोली, हळदू, गांगली, बिल्ला, सीताफल, टेमरू, बांस, कबीता, करमदा, बोर, उंब्या खांखरो, नीम, पीपल, बड़, धावड़ा, पलक, हालर, गोदल, मूका जैसे वृक्षों की बहार रहती। धामड़ा तथा खरण्या गरमी में फल देते।

धामणा वर्षाकाल में फलता है। उंड्यो पकने पर गुलाब जामुन जैसा मीठा फल देता है। गांगली का फल गूंदे जैसा होता है। यह फल और इसके फूल-पत्ते कोई खास उपयोगी नहीं हैं। फल की लूगदी बना मछली को डालने से वह शीघ्र मर जाती है। मच्छी मारनेवाले कभी इसको काम में लेते रहे होंगे। यह गर्मी में फलता है। पूरे पहाड़ पर इसका एक ही वृक्ष देखा गया है जो बड़ा ही सघन और हराभरा है। एक उंब्या वृक्ष भी होता है। बांस को आदिवासी बांडी बोलते हैं। कहते हैं यह जब फलता है तो धरती फोड़ निकलता है।

इण्या अपने पेटे में सुमेरु से लकदक है। कई देशी-विदेशी भूगर्भशास्त्री इसकी परख के लिये यहाँ आये। वे बड़े चकित हुए कि इसमें प्रचुर मात्रा में धनसंपदा है। दूर से यह सारा मायावी भंडार दिखाई देता है मगर नजदीक जाने पर न जाने कहाँ उडन् छू हो जाता है लेकिन जगजाहिर तथ्य यह तो सभी स्वीकारते हैं कि वर्ष में एक दिन दीवाली से पूर्व धनतेरस को पलभर के लिये यह पहाड़ पूरा सोने का हो जाता है।

इसके लिए कहा जाता है कि एक चोर गाय चुरा कर लेजा रहा था। उसने गाय को हांकने के लिए मगरे से एक लकड़ी तोड़ी। कुछ दूर जाकर उसने देखा कि वह पूरी लकड़ी सोने की है। उसे लोभ जागा। वह पुन: उस स्थान पर लौटा जहाँ से लकड़ी तोड़ी थी। कहते हैं लोभ लम्बा फल नहीं देता और अति लोभ दिया हुआ फल भी छीन लेता है। उस चोर के साथ यही हुआ। उसकी वह स्वर्ण लकड़ी पूर्ववत साधारण लकड़ी होगई। वह चोर चपल्या था।

मैंने जब वहाँ बैठे आदिवासियों को कहा कि गवरी में लायाजानेवाला चपल्या चोर का स्वांग इसी घटना की स्मृति एवं साक्षी लिये होना चाहिए तो सभी हँस दिए और कुछ नहीं बोले।

सोमवती अमावस्या को आसपास के गाँवों तथा दूर-सुदूर के लोग इस पहाड़ की पैदल परिक्रमा करते हैं। इस दिन सभी व्रत रखते हैं। पूर्ण संयम से रहते हैं और मन की पवित्रता के साथ-साथ तन को पवित्र एवं पाप मुक्त बनाते हैं।

केदारनाथ के संत शिवगिरि ने बताया कि परिक्रमा के दौरान यात्रियों को पहाड़ से जुड़े द्वादश शिवलिंग का पुण्य मिलता है। ऐसे जीव को चौरासी लाख जीवों की योनि में भटकने से मुक्ति मिल जाती है। उन्होंने बताया कि द्वादश शिवलिंग में छह गुप्त हैं। प्रकट में नांदेश्वर महादेव, गेरी महादेव, काया महादेव, रेंगल महादेव, अमरख महादेव तथा केदारनाथ महादेव हैं जबकि लेइके महादेव, झरणा महादेव, बड़बडिया़ महादेव, फाटादरा महादेव, आमदरी महादेव तथा कोईछा महादेव गुप्त की गिनती में आते हैं।

जेठी पूनम (ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा) को प्रतिवर्ष बारह गाँव के लोग मिलकर मगरा बाबा की सेवा-पूजा के लिए मगरे पर एकत्रित होते हैं। पूर्वकाल में इस दिन संध्या को चढ़ाई कर रात्रिजागरण करते थे और दूसरे दिन प्रात: लौट आते। ये वे ही गाँव हैं जो मगरे के पास बस्ती लिये हैं। इनके नाम आमदरी, काया, सुरपलाया, लाई, कुंडाल, नया खेड़ा, कमली, नोरा, चोकडिया़ तथा छोटी ऊंदरी एवं बड़ी ऊंदरी हैं। धीरे-धीरे समय के बदलाव से यह जिम्मा केवल आदिवासियों तक सीमित हो गया तब भी इण्या मगरा और मगरा बाबा से जुड़ाव के साक्षी रूप में जब भी इन गांवों के किसी भी निवासी के घर विवाह होता है तब इस मगरे की हालर, बांस और केमड़ों वृक्ष की लकड़ी लाकर मंडप में रखी जाती है।

रात्रिजागरण पर प्रत्येक आदिवासी अपने साथ कुछ आटा और गुड़ की डली ले जाता है। सबका आटा-गुड़ संयुक्त कर बाटे (बड़ी बाटियाँ) बनाये जाते हैं और उनके साथ गुड़ मिलाकर प्रसाद तैयार किया जाता है तब इसकी धूप दी जाती है। धूप से पूर्व मगरा बाबा के स्थान की सफाई की जाती है। सिंदूर मालीपना से उनका श्रृंगार किया जाता है। फूल, पाती, अक्षत आदि की व्यवस्था पुजारी के जिम्मे रहती है।

सबसे पहले इन्द्र भगवान को यज्ञ का भोग लगाया जाता है तदनन्तर मगरा बाबा को भोग लगाया जाता है। मगरा बाबा का आह्वान शंख एवं थाली वादन के साथ किया जाता है। वर्तमान के केशो पारगी को बाबा की छाया आती है। इनसे पूर्व उनके पिता नाथू, दादा उमा तथा परदादा भेरा के शरीर में देवता की पधरावणी (छाया) होती रही।

जेठी पूनम 3 जून गुरुवार 2004 को दिन को इस कार्यक्रम के लिए सुबह आठ बजे ही हमारी चढ़ाई प्रारंभ हुई। हमारे साथ पुजारा कंकुवा तथा हकरा थे। सर्वाधिक संख्या तो बच्चे-बच्चियों की थी। सबसे छोटा छह वर्ष का गिरधारी था जो पहली बार मगरा चढ़ा था। सात वर्ष की राधा तो बकरियाँ चराने ऊपर तक जाती रहती है।

दिन को ठीक एक बजे बाबा का आह्वान किया गया। केशोजी के शरीर में देवता का पदार्पण हमारे लिये बड़ा उल्लासकारी था। पीठ पर सांकल का वार करते हुए उन्होंने भाखणी (भविष्यवाणी) की- 'अहो समयो, अहो बरखा, अहो ग्यारस ने अहो बारस दनियां में परगठ व्है जाये। अहो समयो आछो सुख शान्ति रो व्है। अहो कोई रोग नहीं आवे। सब वातां रो आराम व्है।

बारी-बारी से सबने मगरा बावजी के दर्शन किये। बावजी ने सबको आशीष, आखे और नीम के पत्तों की पाती दी। सब लोग बड़े खुश नजर आ रहे थे। केशोजी के साथ मैं तथा आदिवासी अध्येता भगवानलाल कच्छावा पहाड़ उतर नीचे गोड़ में आये जहाँ एक और प्राचीन देवरा था। माताजी के भोपे लालू पारगी ने बताया कि यह स्थान भी पुराना है। मगरा बावजी का ही यह देवरा है। यहाँ अनगड़ प्रतिमा ही है। चारोंओर वृक्ष थे। केशोजी ने कहा कि यहाँ की रूंखावली कोई नहीं काटता। रक्षाबंधन (राखी) के दूसरे दिन ठंडी राखी को सभी आदिवासी यहाँ आकर देवता का धूप-ध्यान करते हैं फिर देवी गोरज्या के जाते हैं।

जिस नांदेश्वर से यह यात्रा-परिक्रमा प्रारंभ होती है वह नांदेश्वर प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। नारदजी ने यहां बरसों रह तपस्या की थी। मन्दिर के पास ही पवित्र कुंड है। गंगा के समान स्वच्छ-पवित्र पानी वाले इस कुंड के चारों कोनोंपर चार शिवलिंग स्थापित किये हुए हैं।

कुंड के भीतर शिव की प्रतीकात्मक शिला के लिए कहा जाता है कि सिक्का उछाल फेंकने पर यदि वह शिला पर टिक जाता है तो सभी मनोकामनाएं पूर्ण हुई समझी जाती हैं। यों तो वर्षभर ही मगर सावन माह में यहां आनेवालों की तादाद बहुत रहती है। यहीं गोमुख से पानी की धारा निरंतर एक-सी निकलती रहती है। अधिक वर्षा अथवा अकाल की कैसी भी स्थिति में गोमुख-धार का प्रवाह एक समान बना रहता है।

देश के सुप्रसिद्ध परिक्रमा-स्थलों में कामदगिरि की परिक्रमा का कई दृष्टियों से विशेष माहात्म्य है। यह पर्वतमाला उत्तरप्रदेश के बांदा जिला स्थित चित्रकूट की शोभास्थली है। पंचकोसी यह परिक्रमा यों तो सदैव ही आबाद रहती है मगर मुख्यत: सोमवती अमावस को इसका जनसैलाब देखते ही बनता है। इसदिन पूरा मार्ग ही जातरियों से अटा ठठाठठ रहता है। बहती नदी की तरह परिक्रमार्थियों का मेला नानाप्रकार के गीतों, जयकारों तथा चहलकदमी आशा-उम्मीदों से उल्लसित जागरण का शंख वादन किये चप्पे-चप्पे को जगाता, जागृत करता जात्रापथ पर बढ़ा रहता है।

कामदगिरि का अर्थ ही वह पहाड़ी स्थल है जो सर्वप्रकारेण मनोहारी के साथ मनोरथ पूर्ण करनेवाला है। इसकी यात्रा-परिक्रमा पंच कोसी है जिसमें जगह-जगह पांच रहस्यमय अद्भुत एवं अनुपम पड़ाव स्थल हैं जो भगवान राम के जीवन से सम्बन्धित विविध कथा-आख्यान-मिथक लिये हैं।

कामदगिरि पर्वत अनेक रहस्यों के साथ अलौकिक ही है। इसकी विशेषता यह भी है कि इसका आधा भाग मध्यप्रदेश के सतना तक तथा आधा भाग उत्तरप्रदेश के कामतानाथ तक फैलाव लिये है। मुख्यद्वार कामतानाथ में है। यह भी कि इस पहाड़ में बन्दरों का आधिक्य भी बड़ा दिलचस्प है। इस दृष्टि से आधे भाग सतना तक काले मुंह के बन्दर तथा शेष आधे भाग में लाल मुंह के वानर समुदाय का साम्राज्य फैलाव लिये है।

सन् 1978 से 1982 तक शिवरामपुर में मेडीकल ऑफिसर रहे उदयपुर निवासी डॉ. पुरुषोत्तमलाल शर्मा पालीवाल (72) ने 20 जुलाई 2022 को अपने निवास पर बताया कि खास मौकों पर उनकी टीम द्वारा वे स्वास्थ्य सम्बन्धी जनसेवार्थ अपनी उपस्थिति के साथ यात्रा-पथिक बने। मुख्य महत्त्वपूर्ण स्थलों की जानकारी जुटाने के साथ उस दौरान आनेवाले विशिष्टों एवं अति विशिष्टों के साथ अपनी सेवाओं के लिए डॉ. शर्मा हमसफर बनते रहे।

डॉ. शर्मा ने बताया कि कामदगिरि के चहुंओर प्रवाहित पयस्विनी नदी का पानी बहुत ही शुद्ध और गहराई लिये है। पानी में ठेठ पैंदे तक मछलियां देखी जा सकती हैं जो नदी के प्रवाह को शुद्ध एवं स्वच्छ बनाये रखती हैं। मछलियों के कौतुक भी देखते ही बनते हैं। वे स्वच्छन्द इसलिए भी हैं कि उनका शिकार करना पूर्ण प्रतिबन्धित है।

पयस्विनी घने सघन वन के बीच अपना बहाव लिए अनेक ऐतिहासिक अध्यायों का लेखाजोखा समेटे शाश्वत बनीहुई है। मुख्य रूप से भगवान राम के जीवन से सम्बन्धित अनेक स्थलों की वह साक्षी बनी हुई है। उसी के किनारे-कोणों में रामशैय्या, अनसुया स्थल, रामघाट, जानकीकुण्ड जैसे मनोहारी स्थल हैं जो सतयुग के राम, लक्ष्मण तथा जानकी की अनेक यादों को आत्मसात कराते, पुण्य की प्राप्ति के असीम सुख से सराबोर जीवन की सार्थकता की अनुभूति कराते हैं। ये स्थल उसी तरह महत्त्वपूर्ण हैं जैसे काशी की परिक्रमा में कन्दवा, भीमचण्डी, रामेश्वर, शिवपुर तथा कपिलधरा हैं।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 15 जून 2023

सम्पादकीय

लोककलाओं की सुध

आजादी के बाद पहलीबार राजस्थान के लोककलाकारों की सुध लेने का दायित्व कलाविज्ञ देवीलाल सामर ने सम्भाला। सन् 1958 में तब राजस्थान विकास विभाग को एक विस्तृत योजना से वाकिब कर यह काम हाथ में लिया।

पन्द्रह-पन्द्रह दिन के दो माह के चार शिविर बेदला रावजी के महलों में लगे। तहसील स्तर पर पूरे प्रान्त से गाने, बजाने, नाचने तथा अन्यान्य अनुरंजन प्रदाता कलाकार एकत्र हुए। पूरे विश्व में इस तरह का ऐसा अकल्पनीय आयोजन अत्यन्त सफल रहा। इसकी उपलब्धियों के हजारों पृष्ठ भरे जा सकते हैं।

उसके बाद विकास की धारा में सम्मिलित होने के धुंआधार प्रयासों के अन्तर्गत यह भावना बलवती बनी कि पारम्परिक कलाओं को भूले, छोड़े बिना विकास के डग भरना सम्भव नहीं होगा। ऐसे में वह सब त्यागना होगा जिसके दम पर कलाकारों की यजमानी से परिवार का भरणपोषण हो रहा था।

हर गांव में जातिगत संगठन बने। पंचों ने प्रभाव दिखाया कि नई धारा में ही विकास के कारज हैं। पुरानी लकीर पिटने से पिछड़ापन नहीं मिटेगा। जो उसी लिक को पकड़े रहेगा उसे जाति से बहिष्कृत तक करने को बाध्य होना पड़ेगा।

परिणाम यह हुआ कि भवाई, ख्याल, बहुरूपिया, मदारी, सपेरा, तुर्राकलंगी, बैल द्वारा भविष्यकथन करने जैसे अजीबोगरीब अनुरंजन प्रदान करने वाले दृश्य हमारी आंखों से ओझल होने लगे।

सामरजी ने कुछ प्रयास किये उनसे जो परिणाम निकले वे तो पूरे विश्व की आंख खोलने वाले सिद्ध हुए। पहलीबार लोकगीतों, लोकानुरंजनों, कठपुतली आयोजनों तथा राज्यव्यापी कलाकर्मियों तथा शिक्षणों के प्रदर्शनों से कलाक्रान्ति ही मचादी। विश्व का प्रथम पुरस्कार कठपुतली खेल का मिलना तो सर्वोच्च उपलब्धि रही।

पर उसके बाद जो शून्यता घर कर गई उसकी सुध कैसे ली जाय? किसके माध्यम से ली जाय? सरकार की भूमिका क्या हो? ऐसे अनेक प्रश्न हैं। इनकी ओर गम्भीरतापूर्वक सोचने, समझने तथा उसे कार्य रूप में परिणत करने का यह उचित समय है।

ठिकानों के धन-संग्रह से इतिहास-लेखन

हजार वानरों में से एक वानर यदि श्री राम की सेना से निकल कर विरुद्ध हो जाता तो क्या राम लंका विजय नहीं कर पाते! श्रीराम की सेना में हनुमान नहीं होता तो लंका विजय के लिए पुरूषोत्तम को कई दिन और सोचना पड़ता। हनुमान का रूष्ट हो जाना सामान्य बात नहीं है।

महा महोपाध्याय डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा राजस्थानी इतिहास के वेदव्यास थे। उन्होंने प्रसिद्ध इतिहासकार कविराज श्यामलदास दविवाड़िया के सान्निध्य में राजस्थान के इतिहास 'वीर विनोद' के लेखन में सहयोग किया था। वीर विनोद के लेखन का कार्य समाप्त हो जाने पर ओझाजी की राजस्थान म्यूजियम अजमेर में क्यूरेटर के पद पर नियुक्ति हुई और तब उन्होंने अपने राजस्थान के वृहद इतिहास की रूपरेखा तैयार की।

यह उनका सर्वथा वैयक्तिक कार्य था। राजस्थान के इतिहास की सामग्री संकलन और लेखन कार्य के लिए श्री नाथूलाल व्यास और श्री चिरंजीलाल व्यास दो निजी वैतनिक सहायक थे। इस सारे कार्य में अर्थ का प्रबन्ध भी ओझाजी को स्वयं ही करना पड़ता था। अर्थ संग्रह के लिये वे राजस्थान के राजाओं और जागीरदारों के यहां दौरे करते और उनसे द्रव्य प्राप्त करते थे।

इतिहासकार के साथ-साथ वे एक चतुर और समयदर्शी सामशाली भी थे। उन्होंने मेवाड़ राज्य के इतिहास की सामग्री का संकलन करने के प्रयोजन से मेवाड़ के ठिकानों की यात्राएं कीं। शक्तावतों के भीण्डर ठिकानेवालों के अतिरिक्त सभी स्थानों से उन्हें सामग्री और आर्थिक सहयोग मिला।

राजस्थान के 22 राज्यों में शाहपुरा राज्य की दुहरी राजनैतिक स्थिति थी। ब्रिटिश सरकार से शाहपुरा को स्वतंत्र राज्य का स्थान प्राप्त था पर मेवाड़ के शासक शाहपुरा नरेश को अपना सामन्त मानते थे।

शाहपुरा राज्य का प्राचीन नाम फूलिया था। फूलिया का प्रांत शाहपुरा नरेश के पूर्वज राजा सुजाणसिंह को बादशाह शाहजहां ने प्रदान किया था। शाहपुरा नरेश स्वतंत्र शासक थे किन्तु महाराणा अरिसिंह द्वितीय ने शाहपुरा नरेश उम्मेदसिंह की सैनिक सहायता से प्रसन्न होकर उन्हें मेवाड़ का काछेला भूभाग बख्श दिया था।

इसलिए मेवाड़ नरेश शाहपुरा ननेश को अपना अधीनस्थ सामन्त मानकर मेवाड़ के सलूम्बर, बेदला, बदनौर और सादड़ी के सामंतों की भांति ही इनके साथ भी व्यवहार करते थे। वे शाहपुरा की स्वतत्र सत्ता को स्वीकारते नहीं थे। महा महोपाध्याय ओझाजी के मस्तिष्क में भी शाहपुरा के प्रति मेवाड़ के महाराणाओं की मान्यता ही समाई हुई थी।

ओझाजी राजस्थान के इतिहास के लिए धन संग्रह करने के उद्देश्य से शाहपुरा नरेश नाहरसिंह के पास गये। उस समय नाहरसिंह के साथ उनके युवराज उम्मेदसिंह भी विद्यमान थे। उम्मेदसिंह ने ओझाजी के शाहपुरा को मेवाड़ के अधीन मानने के तर्क को स्वीकार नहीं किया और उन पर आक्षेप करते हुए कहा- ''पडितजी! आप राजस्थान के बड़े राज्यों से प्रभाविन होकर, राजस्थान के इतिहास के साथ न्याय नहीं बरत रहे हैं।'' यह कथन ओझाजी को अप्रिय लगना स्वाभाविक ही था।

ओझाजी ने शाहपुरा की उपेक्षा प्रकट करते हुए कहा- ''मेवाड़ बहुत बड़ा है। मेवाड़ में शाहपुरा जैसे कितने ही ठिकाने हैं। यदि आप सहायता नहीं करेंगे तो कोई अन्तर नहीं आयेगा। हजार वानरों में से एक वानर यदि श्री राम की सेना से निकल कर विरुद्ध हो जाता तो क्या राम लंका विजय नहीं कर पाते! मेवाड़ राज्य से शाहपुरा अलग हो जायगा और मेरे इतिहास में आप योग नहीं देंगे तो भी कोई विशेष व्यवधान नहीं आयेगा।

ओझाजी का यह कथन श्रवण कर युवराज उम्मेदसिंह चुप न रह सके। तत्काल ओझाजी को संकेत करते हुए कहा- ''पंडितजी! शाहपुरा सामान्य वानर नहीं है। शाहपुरा की मेवाड़ में वही स्थिति है जो श्रीराम की सेना में महावीर हनुमान की थी। हनुमान नहीं होता तो लंका विजय के लिए पुरूषोत्तम को कई दिन और सोचना पड़ता। हनुमान का रूष्ट हो जाना सामान्य बात नहीं है। राम की सेना में हनुमान का जो स्थान था वही स्थान मेवाड़ में शाहपुरा का है।'' ओझाजी यह सुन कर कुछ नहीं बोले और वहां से चल पड़े।

-सौभाग्यसिंह शेखावत

चुंबल से चुंबक हुई : अयस्कांत मणि

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'-

'इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परौ'... कवि सूर ने स्थान के आधार पर लोहे की पहचान की है मगर उन्होंने चुंबक का प्रयोग नहीं किया। चुंबक क्या है, ये तो बताने की जरूरत नहीं मगर ये है बहुत काम की चीज। एक कहानी इसके साथ जुड़ी है चुंबल या चोंबल चरवाहा की।

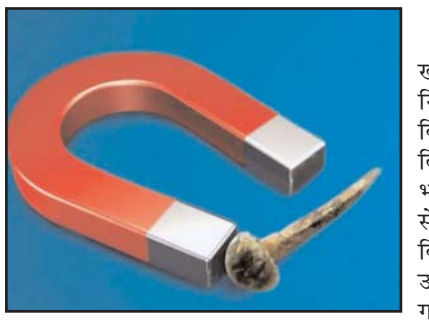

वह भेड़-बकरियां चराते-चराते जब एक चट्टान पर चढ़ गया तो उसके पांव चिपकने लगे। उसने देखा कि बकरियां तो उस चट्टान पर आसानी से भागी जा रही हैं मगर उसके पांव चिपक रहे हैं... बहुत बाद में पता चला कि वह जिस चट्टान पर था, वह चुम्बकीय चट्टान थी। हमारे यहां कृष्णायस के नाम से काले लोहे का वैदिकों को मालूम था, वह वह लोहा था या तांबा, स्पष्ट नहीं है।

अब तक वैज्ञानिकों ने इसका जो इतिहास खोजा है, वह करीब ढाई हजार साल पुराने प्रमाणों के आधार पर तय किया गया है और ये प्रमाण ग्रीस, भारत और चीन से जुटाए गए हैं। ग्रीक वालों ने इसको मैगनेट कहा है जिसका मतलब होता है stone from Magnesia आज भी ये शब्द अंग्रेजी आदि में इसी रूप में व्यवहार में हैं, मगर भारत में इसको चुंबक कहा गया है। यह शब्द संस्कृत में भी है। वराहमिहिर (587 ई.) को इसका मालूम था। उसने अपनी मशहूर रचना 'पंचसिद्धांतिका' में इसका जिक्र किया है कि ऐसा लोहखण्ड जो दूसरे किसी लोहे को अपनी ओर खींचता है।

अन्तर्वेदी विक्रमार्क अत्रिजी का मत है : बौद्धों के लङ्कावतारसूत्र के दसवें अध्याय से दो बातें -

लङ्का समुद्र से घिरा भूखण्ड, भारत से जाने वाले समुद्री मार्ग से नौका या पोत से जाते रहे। सूत्रकार मरीचि से परिचित है, वह मृगमरीचिका से भी परिचित है जो मरुभूमि में दृश्य होती है। समुद्र में भी मरीचिका होती है, गगन में दृश्य दिखाई देते हैं। सूत्रकार ने चुम्बक का उल्लेख किया है। चुम्बक को अयस्कान्त कहा जाता था । ऐसा मान सकते हैं समुद्र यात्रा में दिक्शोधन चुम्बक से होता हो।

भ्रमते गोचरे चित्तमयस्कान्ते यथायसम्॥ 14॥

सूत्रकार कहता है कि दर्पण , जल , नेत्र , भाण्ड अर्थात् चिकने चमकदार पॉलिश वाले वरतन , धातु के वरतन (मिट्टी का हर वरतन भाण्ड नहीं कहा जा सकता) और मणि में बिम्ब दिखाई देता है।

दर्पणे उदके नेत्रे भाण्डेषु च मणीषु च।
बिम्बं हि दृश्यते तेषु न च बिम्बोऽस्ति कुत्रचित्॥ 186॥

तब काच के दर्पण बनने ही लगे थे।

पंचसिद्धांतिका में रोम आदि की खगोलीय गणनाएं भी हैं जो संभवत: रोमक सिद्धान्त हो सकता है। वराहमिहिर ने विदेशयात्रा की थी, यवनों के मतों को आदर दिया था। बृहत्संहिता में उनको ऋषि के समान भी कहा। मगर, उसने चुंबक संबंधी ज्ञान कहां से लिया, यह सोचने वाली बात है। इससे पूर्व विष्णुपुराण जैसे सुरक्षित मूल ग्रंथ में एक उदाहरण में इसका प्रयोग हुआ है जिसमें कहा गया है कि मन को विषयों से हटाकर ब्रह्मस्वरूप स्मरण करना चाहिये। जैसे चुम्बक लोहे को अपनी ओर खींच लेता है, उसी प्रकार जो ब्रह्म का ध्यान करता है, उसे वह ब्रह्म अपनी ही शक्ति से अपने स्वरूप में मिला लेता है। अपने प्रयत्न की अपेक्षा से जो मन की विशिष्ट गति होती है, उसका ब्रह्म से संयोग होना ही 'योग' कहलाता है -

आत्मभावं नयत्येवं तद्ब्रह्मध्यायिनं मुने ।
विकार्य्यज्ञात्मन: शक्त्या लोहमाकर्षको यथा॥
आत्मप्रयत्नसापेक्षा विशिष्टा या मनोगति:।
तस्या ब्रह्मणि संयोगो योग इत्यभिधीयते ॥
(विष्णुपुराण षष्टांश:, अध्याय: 7)

आज जब मैं शैव सिद्धांतों के अध्ययन में लगा था, शिवपुराण के इस श्लोक पर पड़ी -

जगन्ति नित्यम्परितो भ्रमयन्ति
यत्सन्निधौ चुम्बक लोहवत्तम्।
(शिवपुराण, रुद्र. सृष्टिखंड 1, 3)

इसका आशय है कि सृष्टि सर्जक के चारों और जीवात्माएं ऐसे ही घूमती हैं जैसे चुंबक के चारोंओर लोहा। यहां चुंबक का जिक्र बिल्कुल उसी तरह आया है जैसे कि आज प्रयोग वाले जानते हैं। मगर, ये संदर्भ अधिक पुराना नहीं है। यह 10वीं सदी के आसपास का ही है। इसके बाद, अन्य सिद्धांत गणित के ग्रंथों में भी यह जिक्र मिल जाता है। वास्तु के कुछ निबंध ग्रंथों में दिक्शोधन के प्रसंग में चुंबक का वर्णन आता है। मगर, दिशा शोधन के लिए यंत्र बनने में इतनी देरी क्यों लगी। ये संदर्भ और कहां हैं, यह विचारणीय है।

अपना देश अपनी संस्कृति

जड़ेली का कमाल

मेघला मेवाड़ का बड़ा नामी डाकू था। वह बड़ा साहसी और शूरवीर था। लोग उसके नाम से ही घबराते थे। डाका डालने में वह जितना पहुंचा हुआ था उतना ही अपने उसूल का पक्का था। जाति से वह बावरी था।

उन दिनों उदयपुर में दिल्ली दरवाजे के पास बड़ के नीचे जेल थी। देवगढ़ का केसरसिंह राजपूत मुखबीर था जो मेघला को पकड़कर लाया था। मेघला के हाथों में हथकड़ी और पांवों में बेड़ी थी। वह अन्य कैदियों के साथ मस्ती से अपनी सजा काट रहा था।

एकदिन कैदियों ने मेघला से मजाक की और कहा कि सुनते तो यह आ रहे थे कि इस जमीं पर कोई माई का लाल ऐसा नहीं जन्मा जो मेघला को बंदी बना सके पर मेघला तो अपने चारों हाथ-पांवों में बेड़ी से जकड़ा हुआ है। यह सुन मेघला मुस्करा दिया। उसके मन में यह बात गहरी पैठ गई। उसने तय कर लिया कि कैदियों को ऐसा चमत्कार बताना पड़ेगा जिससे वे यह जान सकें कि असली मेघला के भीतर एक और मेघला है जिसका भेद कोई नहीं जान पाया।

दूसरे दिन सुबह उसने सभी कैदियों को जादू बताने की घोषणा की और देखते ही देखते बेड़ीबंध को छुआ उसकी कील अचानक उछलकर दूर जा गिरी। इससे बेड़ी खुलकर अलग हो गई। सभी कैदियों में खलबली मच गई। पहरा दे रहे मुबारक गनी ने भी मेघला का यह करिश्मा देखा तो उसका रोम-रोम कांप उठा। इस घटना से मुखबीर केसरसिंह के होश भी खट्टे हो गये।

मेघला की इस करतूत की खबर हाकिमसाब को दी गई तो वे बड़े आग बबूला हुए और मेघला को खूब डांटा फटकारा । मेघला ने निडरता से कहा- इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। बेड़ी खुल गई फिर भी मैं भागा तो नहीं हूं। यदि नौ-दो-ग्यारह हो जाता तो मेरा कोई क्या बिगाड़ लेता। अब तो एकमात्र यही चारा है कि लुहार को बुलाकर बेड़ी के डबल कील लगवा दी जाय।

हाकिम ने ठंडे मन से सोचा कि मेघला जो कुछ कह रहा है, उसकी बात मान ली जाय। यदि महाराणा साहब को पता चल गया तो लेने के देने पड़ जायेंगे। हाकिम ने लुहार को बुलाकर डबल कील लगवा दी।

थोड़े दिन निकल जाने पर मेघला ने अपने साथियों के समक्ष बीती बात का रहस्य खोलते हुए कहा- वह कोई जादू नहीं था। केवल एक जड़ेली का कमाल था जिसके छुवाने मात्र से वह कील दूर जा पड़ी। जड़ेली का वह कमाल तो कुछ भी नहीं है। यदि मै अपने सारे कमाल दिखाने लग जाऊं तो पता नहीं क्या स्थिति हो।

वह चाय चम्मच से हिलाते-हिलाते

1997 के जून महीने की बात है जब मैं उदयपुर के राजस्थान विद्यापीठ की घटक संस्था साहित्य संस्थान में नौकरी करता था। उस समय डॉ. मोतीलाल मेनारिया हमारे निदेशक थे।

दिन को दो बजे करीब हमारी चाय बनती थी। पीने वाले हम पांच व्यक्ति थे सो पांच ही कप चाय बनती थी। चपरासी मेघराज ने चाय बना हमारे सम्मुख रख दी। एक कप डॉ. मेनारिया साहब को उनके कक्ष में पहुंचाना पड़ता था।

उस दिन मेघराज ने कहा कि डाक्टर साहब की चाय में ऊपर से एक चम्मच अतिरिक्त डालने वाली शक्कर समाप्त हो गई है। हम सोच में पड़ गये। बाजार से शक्कर लाने में देर लगेगी तब तक चाय ठण्डी हो जायेगी सो हमने तै किया कि सदैव की तरह चाय को चम्मच से हिलाते दे आओ।

मेघराज सहमता-सहमता बेमन गया और चाय रख आया। कुछ देर बाद गया तो खाली कप ले आया। डॉक्टर साहब ने उसे कुछ नहीं कहा। कहा तो सिर्फ यही कि आज की चाय कुछ अलग से थी। उसमें कुछ डाला था क्या?

मेघराज मुस्कराता हुआ आया और बोला, आप लोगों का अन्दाज ठीक ही रहा। डॉक्टर साहब ने अच्छी से चाय पी ली और चाय की प्रशंसा की।

डॉ. मेनारिया समय के पक्के पाबन्द थे। साहित्य संस्थान में सेवानिवृत्ति के बाद उनका समय 12 से 3 बजे तक का था। एक दिन वे मुझे साहित्य संस्थान की सीढ़ियों पर बैठे मिले। उन्हें अचानक देख में हक्का-बक्का हो गया। मैंने पूछा, 'आप यहां कैसे?' वे अपनी घड़ी देख बोले, 'अभी दो मिनिट शेष हैं। मेरा समय ठीक 12 बजे से है।'

इसी प्रकार एकदिन विद्यापीठ के संस्थापक जनुभाई उर्फ जनार्दनराय नागर मिटिंग ले रहे थे। उसमें डॉ. मेनारियाजी भी आमंत्रित थे। मिटिंग चलते 3 बज गई। मेनारियाजी ने घड़ी देखते ही छतरी की डांडी ऊंची की और कहा, 'अच्छा जनुभाई!'

जनुभाई बोले, 'अभी तो मिटिंग समाप्त ही नहीं हुई।' मेनारियाजी बोले, 'मेरा समय तो 3 बजे तक का ही है। संस्था आपकी है, आप चाहें तो रातभर ही मिटिंग करते रहें और तपाक से चल दिये।'

- म. भा.

रेत के झूंपों में संगीत की स्वर लहरियां देते वादक (3)

– डॉ. महेन्द्र भानावत –

मशक :

उदयपुर में 1993 के मई माह में आयोजित एक समारोह में लक्ष्मणगढ़ के गंडूला गांव के मशक वादक भगवाननाथ ने बताया कि राजस्थान के अलवर, सवाई माधोपुर तथा जयपुर जिले के कई

गांवों में मशक बजाने वाले मिलते हैं। उनके अनुसार छोटी उम्र से ही बालक इस कला से जुड़ जाता है।

एक पिता इस परम्परागत विरासत को कलात्मक रूप से आजीविका का माध्यम बनाने के कारण उसका पुत्र भी संस्कार स्वरूप सहज ही इसे सीख जाता है और फिर किसी उस्ताद से भी इसका सिलसिलेवार शिक्षण-प्रशिक्षण दिलाया जाता है। भगवाननाथ ने अपने पिता से ही मशक बजाना सीखा जो मशक पर वीररस के गीतों के साथ लोकप्रसिद्ध भरथरी पिंगला, महादेव, मीरांबाई, भैरू से सम्बन्धित भजन गाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे।

भगवाननाथ भी इसी प्रकार मशक बजाते-बजाते बड़े ख्यातिलब्ध कलाकार बन गये। इस विचित्र वाद्य की बनावट तथा बजावन को प्रत्यक्ष करते हुए उन्होंने बताया कि यह बकरी की खाल से बनाया जाने वाला वाद्य है। इसके लिए बिना चीरे बकरी की पूरी खाल भीतर से खोखली कर रंगाई जाती है फिर सिर और पांव अलग कर दिये जाते हैं। मशक में इनका प्रयोग-उपयोग नहीं होकर खाल का शेष शरीरी भाग ही काम में लिया जाता है।

मशक के लिए इस खाल को उल्टी कर पैरों के छिद्र खुले रखते हैं, शेष सभी बन्द कर दिये जाते हैं। बन्द किये छिद्रों को कट्ठे डोरे से बांध देते हैं और फिर मोम पिलाकर उन्हें वायुरोधी बना देते हैं। उल्टी खाल में ही आगे के दाहिने पांव में नरसल की फांस लगी बांस निर्मित दो पूंगियां लगाकर खाल को उल्टी कर देते हैं। तीनों पांव तथा पृष्ठ भाग की बंधाई की हुई सारी खाल भीतर चली जाने के बाद शेष बचे बायें पैर के छिद्र में लकड़ी या प्लास्टिक का एक निपिल लगा शेष भाग को पूर्व की तरह ही डोरे से कट्ठा बांध मोम लगा दिया जाता है। सुन्दरता के लिए पूंगी में मनचाही कलाबूती पूर्ण लटकन लगा दी जाती है।

मशक वादन के समय मशक को बगल में तकिये की तरह उल्टी स्थिति में रखा जाकर मशक को दबाते हुए फूंक भरते हैं। यह हिस्सा 'डाट' कहलाता है। दूसरी ओर हवा पूंगी के रास्ते निकलकर अंगुलियों की सहायता से स्वर उत्पनन किया जाता है। यह हिस्सा 'नलवा' कहलाता है। मशक को तेल से चुपड़ कर ताजा, चमकीला बना कपड़े में समेटकर बड़े जतन से रखा जाता है। मशक के साथ बजने वाले संगत वाद्यों में सारंगी, खंजरी तथा मंजीरे ध्वनि को विशेष कर्णप्रिय बनाते हैं।

रबाब :

प्राचीन ग्रन्थों में रबाब का इतिहास विभिन्न नामों की पहचान लिए है। मेवाड़ महाराणा कुम्भा रचित संगीतराज से लेकर बाद के अनेक ग्रन्थों में रबाब चर्चित रहा। यों पांच हजार वर्ष पूर्व के हड़प्पा मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त मोहर पर तंतु वाद्य हार्प का चित्र तार वाद्यों की उपस्थिति का परिचय देते हैं।

इन वाद्यों में वीणा, सितार, सरोद, इकतारा, तानपुरा जैसे प्रमुख तार वाद्यों का उल्लेख मिलता है। संतों ने अपनी गायकी में रबाब की लोकप्रियता के कारण ही उल्लेख किया है। समय-समय पर इसकी बनावट तथा तारों की संख्या में बदलाव होना स्वाभाविक है।

आइने अकबरी में रबाब में बकरे की तांत के छह तारों का वर्णन मिलता है। बाद में इसके पांच तार तथा उनके नीचे बाईस धातु के तार और पर्दों के अनुनाद का उल्लेख मिलता है। आंतों की जगह डोरों तथा रेशमी तारों का इस्तेमाल भी मिलता है।

रबाब के सम्बन्ध में और भी कई शोधात्मक तथ्य दिये हैं। उदयपुर के आकाशवाणी केन्द्र में कईबार उनसे संगीत और सांगीतिक वाद्यों तथा उनके घरानों पर बड़ी गम्भीर चर्चा होती रही। उन्हें रबाब के उल्लेखजनित अनेक काव्यजनित जुमले कंठस्थ थे। अनेक मुस्लिम रबाबियों के नामों का स्मरण कर उन्होंने बताया कि रबाब के माध्यम से उन फनकारों ने आध्यात्मिक संगीत और लोकसंगीत की भी अच्छी पहचान दिलाई।

वर्तमान रबाब की बणगट पर उन्होंने बताया कि कश्मीर, पंजाब और सिंध के वर्तमान रबाब में पोली लकड़ी के डांड के किनारे तूम्बा होता है। तूम्बे पर पतले चमड़े की झिल्ली मढ़ी रहती है। डांड पर तारों को कसने के लिए खूंटियां लगी रहती हैं। तूम्बे के मुख्य तार के अलावा ग्यारह तार लगे होते हैं। ये तार अनुनाद में सहायक होते हैं। आंतों के छह तार हाथीदांत निर्मित घोड़ी से होते हुए डांड के बाजू के मूठियों पर कसे होते हैं। ये स्वर की स्थिति के द्योतक हैं। कुछ नये रबाबों में तरब लगने लगी है। रबाब की विशेषता यह है कि उसमें परदे नहीं होते हैं। न ही सरोद की तरह नीचे चमकती धातु की चद्दर। इसे मिजराब की जगह जवा से झंकृत किया जाता है।

संदर्भ सूत्र :

'पुराने रबाब की नई कहानी', राम शास्त्री, जनसत्ता, बम्बई, 04 जुलाई 1990, पृष्ठ 7

-क्रमशः

भूकम्प की तरह आना और लावे की तरह फूटना अक्कल दाढ़ का

– डॉ. महेन्द्र भानावत –

उनकी दाढ़ आई तो ऐसी आई कि जैसे वे जीवित मौसरा करने को ही उतारु हो गये हों। तोंद से पाजामा खिसक गया और नाड़ा वटवृक्ष की जड़ेली सा नीचे लटक गया। वे चारपाई पर ऐसे लेटे कि मुर्दा भी क्या लेटेगा। मित्रों को खबर दिलवा दी कि वे शीघ्र आकर मिलें। उनकी अक्कल दाढ़ ने उन्हें ऐसा सख्त सिरियस कर दिया है कि जैसे उनका सौ प्रतिशत जीवन 99 प्रतिशत राइट ऑफ हो चुका है।

उनकी दृष्टि में मैं भी उनका कम पक्का मित्र नहीं था सो घर ज्योंही समाचार आया कि अमुक बाबूजी तमुक हो गये हैं तो श्रीमतीजी घबराई। लेट्रिन में पत्थर बजाते-बजाते मुझे टोंका और कहा कि श्रीमानजी! आपके अमुकजी का तमुक होने का बुलावा आया है। जिस सूरत में भी हो तत्काल पहुंचो। सूरत की बात सुनते ही हमारा मन पहले तो अपने को खूबसूरत बनाने में हुआ मगर हम अपनी स्थिति को यथास्थित किये चड्डी का नाड़ा भी पूरा नहीं बांधा और वहां जा पहुंचे।

ज्योंही समाचार आया कि अमुक बाबूजी तमुक हो गये हैं तो श्रीमतीजी घबराई। लेट्रिन में पत्थर बजाते-बजाते मुझे टोंका और कहा कि श्रीमानजी! आपके अमुकजी का तमुक होने का बुलावा आया है। जिस सूरत में भी हो तत्काल पहुंचो। सूरत की बात सुनते ही हमारा मन पहले तो अपने को खूबसूरत बनाने में हुआ मगर हम अपनी स्थिति को यथास्थित किये चड्डी का नाड़ा भी पूरा नहीं बांधा और वहां जा पहुंचे। बिना किसी सूचना परवाना के यह भूकम्प की तरह आती है और लावे की तरह फूट पड़ती है। इस समय इतनी पीड़ा होती है जितनी एक जच्चा को प्रसव के समय होती है।

जबसे हमारे अक्कल दाढ़ आई है तब से हमने भाई लोगों को जो-जो बातें कहीं वे हमारा लोहा मान गये हैं। कई सिंगल में अपना गाड़ा खींच रहे थे अब तिगुन चौगुन में चल रहे हैं। जिन्हें कभी भौंकना नहीं आता था वे अब शास्त्रीय संगीत की नाइट फाइट कर रहे हैं। जिनकी शक्ल में कभी बारह बजा करती थी वे अब पौबारह हो रहे हैं।

पहुंचे तो देखा अक्कल दाढ़जी लोगों से ऐसे घिरे हुए हैं जैसे कोई शिकार शिकारियों के बीच फंस गया हो। हमने सोचा क्यों न अक्कलदाढ़जी पर एक फीचर ही लिख दिया जाय सो हमने उन्हीं की वहां पड़ी डायरी उठाई। एक सज्जन से 'कृपापेन' प्राप्त किया और पूछना प्रारम्भ किया।

सबसे पहले कब आपको यह अहसास हुआ कि अक्कल दाढ़ आई है और आप कैसा महसूस करते रहे? वे बोले-'भगवान किसी को ऐसी दाढ़ न दे। इससे तो मौत भली अच्छी।' मैंने कहा – 'लोगबाग साहित्य सृजन में कल्पना की आकाशी उड़ान भरते रहते हैं।'

मैं जरा प्रेक्टिकल साहित्यकर्मी अधिक हूं सो हर बात प्रामाणिक चाहता हूं। अक्कल दाढ़ के तो पट्टी परवाने शिलालेख ताम्रपत्र जो भी समझो आप ही हैं । मेरी इस बात पर इन्हें जोश आया। वे अपनी खटिया पर ऐसे हिले जैसे अर्थी का मुर्दा जीवित हो उठा हो। उन्होंने मुझे लिखने का इशारा दिया और अपना एक हाथ दाढ़ पर तथा दूसरा सिर पर दाबे बोलना प्रारम्भ किया।

बिना किसी सूचना परवाना के यह भूकम्प की तरह आती है और लावे की तरह फूट पड़ती है। इस समय इतनी पीड़ा होती है जितनी एक जच्चा को प्रसव के समय होती है। मैंने उन्हें बीच ही में रोका और कहा- 'देखिये, आप विषयान्तर हो रहे हैं। जच्चा की अनुभूति आप कैसे दे सकते हैं? हो सकता है हम किसी जच्चा से पूछे और वह अपनी प्रसव पीड़ा की तुलना अक्कल दाढ़ से न कर हमें कोई और टोपिक दे दे।' वे 'सोरी' कहकर मौन हो गये।

मैं समझा उनका दर्द इतना बढ़ गया है कि वे 'हरिशरण' जाने वाले हैं पर ज्योंही उन्होंने करवट ली कि उनका बेलेंस बिगड़ गया और वे पास बैठे हमीं लोगों पर आ गिरे तब हमने भी 'सोरी' कहकर उन्हें अपने हाथों से खटिया पर लुढ़क दिया जैसे हम्माल लोग अपनी सब्बल से किसी पट्टी को इशारे से थाल देते हैं।

थोड़ी देर बाद उन्होंने आंखें खोली। हमारे जी में जी आया। तब तक उनका कमीजनुमा बनियान अपनी मरजी में हो गया था। हमने देखा कि उनकी नाभि और उसके आसपास का स्थान कुछ ऐसा ऊहापोही बन गया है जैसे किसी तलई में कांकर पर कोई टींटोड़ी अपने अण्डों पर बैठी हो और उनके स्तन का उभार जैसे किसी ने बच्चों के खेलने की छोटी नक्काड़ी ही उलट दी हो ।

मैंने पूछा दाढ़ आने के साथ अक्ल आने की कोई तर्क संगत टिप्पणी दीजिये। उन्होंने अपने तूती मुंह को तुता बनाया। जोर की जम्हाई से वहां उड़ रहे दो चार मक्खों का सर कलम किया और कहा- 'दाढ़ फूटते ही ऐसा चटीका मारती है जैसे कटी अंगुली पर पेशाब की धार, होली में कोड़ों की मार और आंख देकर नदारद होने वाली नार।' मैंने बीच ही में उन्हें 'प्लीज, टू द पोइन्ट' कहा तो उन्होंने अपने तकिये को तोंद से अड़ाया। कुछ गोल मटोल हुए और फरमाना शुरू किया- 'आप क्यों मेरी ऐसी तैसी करने पर तुले हुए हैं। मेरा दर्द कम भी करेंगे कि अपनी अक्ल बघारते-बघारते मेरा रहा सहा हाड़ ही गला देंगे। दाढ़ आपको जो आ जाय तो चूंची सा मुंह हो जाय। मगर सच मानिये अक्कल दाढ़ सचमुच में आदमी की अक्ल को कई गुना बढ़ा देती है।'

वे बोले- 'यों जिंदगी में हमने कभी अच्छे काम किये ही नहीं। जितने भी किये मूर्खातापूर्ण निकले। कई लड़कियां हमारे जीवन में आईं। बोली भी बिचारी कि शादी करलो नहीं तो बाद में पछताओगे। हमने उनकी बात नहीं मानी और फ्री स्टाइल में अपनी शेखी बघारते रहे। आज जब उम्र सफेद होने आई तो हम अकेले थकेले ऐसे हो गये कि दिन हमें दबोचता है और रात नोचती है।

हर पल ही हमारा डबल साढ़े साती और तबल शनिश्चरी में बीत रहा है मगर जबसे हमारे अक्कल दाढ़ आई है तब से हमने भाई लोगों को जो-जो बातें कहीं वे हमारा लोहा मान गये हैं। कई सिंगल में अपना गाड़ा खींच रहे थे अब तिगुन चौगुन में चल रहे हैं। जिन्हें कभी भौंकना नहीं आता था वे अब शास्त्रीय संगीत की नाइट फाइट कर रहे हैं। जिनकी शक्ल में कभी बारह बजा करती थी वे अब पौबारह हो रहे हैं।

भगवान एक-एक सबको अक्कल दाढ़ दे ताकि हमारे देश में कोई मूर्ख की श्रेणी में न रहे। सारा देश अक्कलवान बने और अपनी प्राचीनता की तरह हमारा देश सारे विश्व में अपनी अक्कल का आचार-मुरब्बा सप्लाई करता रहे।

आखर की करामात

-नन्दकिशोर शर्मा-

एक भोजक ब्राह्मण अपने गाँव के खेत से लकड़ियाँ काटकर नगर में बेचने आया। नगर के द्वार पर राजा का दाणी कर लेने वाला व्यक्ति नियुक्त था। उसका नाम भी खेतसिंह था। जैसे ही द्वार पर पहुंचा, दाणी ने भोजक से कहा- दाण करदो। उसने कहा- अभी मेरे पास नहीं है। वापस आते समय चुका दूंगा। लकड़ियाँ बिकने पर मैं दे दूंगा लेकिन वह नहीं माना। उसने कहा कि मेरे पास केवल कपड़ों के अलावा कुछ भी नहीं है। विश्वास करो, मैं ब्राह्मण हूँ। तुम्हें आकर दे दूंगा लेकिन उसने उसकी बात नहीं मानी और कहा, कुछ भी नहीं हो तो अपना अंगोछा यहाँ रख जाओ।

उसने कहा, मैं ब्राह्मण हूँ। तुम मेरा विश्वास करो वरना मेरे आखर चल जायेंगे। मैं देवी भक्त हूँ। वह बोला, जा-जा तेरे जैसे कई चमत्कारी मैंने देख लिए हैं। तुम्हारे को जो करना हो कर लेना। उसने कहा, देख मान जा। वह नहीं माना तब उसने कहा-

खै खै रे खेतिया,
कड़कड़ करती बीज।
घर दोगड़ रो भागसी,
साँवणिये री तीज।।

वह अपना वस्त्र छोड़कर चला गया। उसकी यह काव्य रचना तथा खेतसिंह के दुर्व्यवहार की चर्चा सारे नगर में होने लगी। उसकी पत्नी जिसका नाम दोगड़ था, चिन्ता करने लगी। उसने कहा, आपने ऐसा क्यों कहा। कभी-कभी आखर चल जाते हैं। उसने कहा, तुम चिन्ता मत करो। मैंने ऐसे कई पाखण्डी देखे हैं।

महिने बीतते चले गये। सावण महिना आ गया। दोगड़ ने कहा, आज तीज का दिन है। खेतसिंह अपनी मेड़ी में जाकर छुपकर बैठ गया। बारी, दरवाजे सब अच्छी तरह से ढक दिये। बरसात हो रही थी। तालाब भर गये थे। प्रातःकाल होने वाला था। खेतसिंह बड़ा खुश था। उसने कहा, मैं अब खेते ब्राह्मण की खबर लूँगा। उसने दरवाजे खोल दिये। झरोखे पर बैठा हवा खाने लगा। दूर बिजली चमक रही थी। देखते ही देखते बिजली की चमचमाहट फैली और खेतसिंह के महल को गिरा गई। खेतसिंह मारा गया।

खेता और खेतसिंह एक ही वर्ण के शब्द हैं। दोनों का नाम एक ही था। इस कारण काव्योक्ति में खेतसिंह की पत्नी का नाम लेकर सम्बोन्धित किया गया। दोगड़ विधवा हो गई। इस काव्योक्ति (आखर करामात) का प्रयोग आज भी लोग अपने पर अन्याय करने वाले लोगों को डराने के लिए करते है।

खै, खेवण (बिजली की चमक), खेतिया (व्यक्ति का नाम), कड़कड़ (कड़- कड़ की आवाज), बीज बिजली घर दोगड़ का भागसी, दोगड़ के पति का मर जाना और उसका विधवा हो जाना। यह दिन श्रावण माह का तीसरा दिन तीज था।

बाजार / समाचार

स्कूलों में रेनवाटर हार्वेस्टिंग इंफ्रास्ट्रक्चर इंस्टॉल

उदयपुर (ह. सं.)। पीएण्डजी इंडिया ने घोषणा की है कि देश में पानी के अभाव वाले क्षेत्रों में जल संरक्षण के अपने प्रयासों के तहत कंपनी ने नौ शहरों में 'पीएण्डजी शिक्षा' द्वारा समर्थित स्कूलों में रेनवाटर हार्वेस्टिंग (आरडब्ल्यूएच) इंफ्रास्ट्रक्चर इंस्टॉल किया है। इस पहल का निष्पादन राउंड टेबल इंडिया के साथ भागीदारी में कोटा, अहमदाबाद, जोधपुर, बद्दी, उदयपुर, भोपाल, चेन्नई, रायपुर और पॉन्डीचेरी में हुआ है।

पीएण्डजी इंडिया में खरीदारी एवं पर्यावरणीय स्थायित्व के प्रमुख पवन वर्मा ने कहा कि इसके साथ ही, रेनवाटर हार्वेस्टिंग इंफ्रास्ट्रक्चर्स संयुक्त रूप से हर साल लगभग 10 लाख लीटर पानी बचाने में सहायक होंगे, जिसका इस्तेमाल स्कूल पीने से अलग हटकर दूसरे कामों में कर सकेंगे। वर्षाजल के संचय द्वारा, इस पहल का लक्ष्य इन स्कूलों द्वारा पानी की नगरपालिका से होने वाली आपूर्ति पर निर्भरता और इस्तेमाल को कम करना और भूमिगत जल के स्तर को सुधारने में मदद करना है। इसके अलावा, स्कूलों में रेनवाटर हार्वेस्टिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की सुलभता से कम सुविधा-प्राप्त क्षेत्रों के बच्चे भी छोटी उम्र से पर्यावरण संरक्षण की मूलभूत समझ और आवश्यकता को अपना रहे हैं।

ज़िंक में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

उदयपुर (ह. सं.)। वेदांता समूह की कंपनी और भारत में जिंक, लेड और सिल्वर के सबसे बड़े और एकमात्र एकीकृत उत्पादक हिंदुस्तान जिंक ने सघन वृक्षारोपण एवं पर्यावरण प्रबंधन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। कंपनी की सभी परिचालन इकाइयों में विभिन्न गतिविधियों, वृक्षारोपण अभियान, मैराथन, अपशिष्ट प्रबंधन अभियान, नुक्कड़ नाटक, प्रतिज्ञा समारोह का आयोजन कर स्वच्छ एवं संरक्षित पर्यावरण का संकल्प लिया। इस अवसर पर राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के चैयरपर्सन नवीन महाजन एवं हिन्दुस्तान ज़िंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण मिश्रा ने बायोडावर्सिटी पर आधारित कॉफी टेबल बुक का विमोचन किया। जिसमें हिन्दुस्तान की विभिन्न इकाइयों में पक्षियों के चित्र एवं वर्णन दर्शाए गये है।

अरुण मिश्रा ने कहा कि जिंक में हमारा ध्यान हमेशा भविष्य की पीढ़ी के लिए पृथ्वी की रक्षा और संरक्षण कर हमारी खनन और स्मेल्टिंग इकाइयों के सतत संचालन पर रहा है। हम हमारे संचालन के हर पहलू में पर्यावरणीय प्रबंधन को एकीकृत कर सस्टेनेबल भविष्य बनाने के लिए व्यापक स्थिरता लक्ष्य 2025 की स्थापना की है। हमने विज्ञान आधारित लक्ष्यों द्वारा निर्धारित 1.5 डिग्री लक्ष्य को प्राप्त करने पर विशेष ध्यान देने के साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए वैश्विक आंदोलन के साथ स्वयं को जोड़ा है। हम पर्यावरण संरक्षण, सुधार पहलों के कार्यान्वयन, भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयारी और नेट जीरो उत्सर्जन में योगदान के लिए प्रतिबद्ध हैं।

इल्युमिनाती फैशन शो लिए फाइनल ऑडिशंस सम्पन्न

उदयपुर (ह. सं.)। फैशन के क्षेत्र में करियर बनाने की इच्छा रखने वाले उदयपुर संभाग के मॉडल्स के लिए शहर का सबसे पंसदीदा फैशन शो इल्युमिनाती 2023 जुलाई माह के पहले सप्ताह में आयोजित होगा। फैशन शो के लिए फाइनल ऑडिशन वीआईएफटी में सम्पन्न हुए। प्री राउण्ड में चयनित प्रतिभागियों ने फाइनल ऑडिशन में वॉक और टेलेंट हंट में भाग लिया। ऑडिशन के फाइनल राउण्ड में चयनित मॉडल्स को जुलाई में होने वाले फैशन शो में नामी मॉडल्स के साथ राजपुताना और मुगल थीम पर रैम्प पर टेलेंट दिखाने का अवसर मिलेगा।

चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल ने बताया कि वीआईएफटी की ओर से इल्युमिनाती फैशन शो के माध्यम से स्थानीय मॉडल्स को राष्ट्रीय स्तर तक पहचान दिलवाने का और करियर बनाने का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। पूर्व के शो में भाग लेने वाले कई प्रतिभागियों को बड़े प्रोजेक्ट में काम करने का अवसर मिला है। इल्युमिनाती फैशन शो की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसके सभी मॉडल्स की ड्रेस कॉलेज के स्टूडेंट्स डिजाइन करते हैं।

रक्तदान शिविर में 73 यूनिट रक्त संग्रहित

उदयपुर (ह. सं.)। राउंड टेबल इंडिया और फील्ड क्लब उदयपुर द्वारा लेडीज सर्किल इंडिया, उदयपुरब्लॉग, उदयपुरवाले डॉट कॉम के सहयोग से फील्ड क्लब में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में कुल 73 यूनिट रक्त संग्रहित हुआ। एमबी हॉस्पिटल ब्लड बैंक और सरल ब्लड बैंक के सहयोग से आयोजित रक्तदान शिविर में लोगों ने बढ़चढ़कर भाग लिया। राउंड टेबल के शशांक सिंघवी तथा फील्ड क्लब के सचिव उमेश मनवानी ने रक्तदाताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

तारा संस्थान ने 12वां स्थापना दिवस मनाया

उदयपुर (ह.सं.)। तारा संस्थान ने अपना 12वाँ स्थापना दिवस श्रीमती कृष्णा शर्मा आनंद वृद्धाश्रम में उत्साह से मनाया।

तारा संस्थान की अध्यक्ष एवं संस्थापक श्रीमती कल्पना गोयल ने कहा कि 12 जून को तारा संस्थान की नींव एक छोटे से परिसर में रखी गई थी जो आज एक विशाल वटवृक्ष के रूप में खड़ा हो गया है। तारा संस्थान के रहवासी सतीश अग्रवाल ने कहा कि मैंने कई वृद्धाश्रम देखे लेकिन इसके जैसा मिलना अत्यन्त दुर्लभ है। दीपक शर्मा ने कहा कि तारा संस्थान ध्रुव तारे की तरह हमेशा चमकता रहेगा। कार्यक्रम को श्रीमती दीपा दुबे, डॉ. संध्या त्यागी, हेमराज पौद्दार, विजय चौहान, संजय कुमावत, मुकेश शर्मा, देविका शर्मा ने भी संबोधित किया। रामचन्द्र कुमावत, राजकुमार मेघवाल, पुष्पा गुप्ता, दीपा दुबे, विजयकुमार सिंघानिया ने गीतों व भजनों की प्रस्तुति दी। संचालन श्रीमती संगीता देवड़ा ने किया।

उल्लेखनीय है कि तारा संस्थान के मुम्बई, दिल्ली, फरीदाबाद, लोनी तथा उदयपुर में आँखों के हॉस्पीटल हैं। अभी तक सभी हॉस्पीटलों में 1,35,000 से भी अधिक ऑई ऑपरेशन नि:शुल्क किये जा चुके हैं। इसके अलावा दो वृद्धाश्रम उदयपुर तथा एक प्रयागराज में चलाया जा रहा है। संस्थान द्वारा बच्चों के लिए स्कूल व विधवा महिलाओं के लिए राशन सामग्री का वितरण प्रतिमाह किया जाता है।

संस्कार से संसार बनता है : बी. के. शिवानी

उदयपुर (ह. सं.)। बच्चों को संस्कार माता के गर्भ से ही मिलना शुरू हो जाते हैं। जो संस्कार बच्चे को 9 महीने में मिलते हैं उससे ही उनका ब्रेन विकसित होता है। संस्कार से संसार बनता है अगर बच्चों को हम अच्छे संस्कार नहीं देंगे तो बच्चा चाहे कितनी भी ऊंचाइयों पर पहुंच जाए, वह सफल व्यक्ति नहीं बन सकता। ये विचार ब्रह्मकुमारीज बी. के. शिवानी ने पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल एवं ब्रह्माकुमारीज संस्थान आबू पर्वत के सहयोग से न्यूरोथियोलॉजी के 10वें सम्मलेन में व्यक्त किये। उन्होने कहा कि अपने संस्कार को अच्छा बनाने के लिए विज्ञान और आध्यात्म की शक्ति को अपनाते हुए अपनी लाइफ स्टाइल को भी बदलना पड़ेगा।

सम्मलेन का उद्घाटन प्रख्यात मनोचिकित्सक रिरि त्रिवेदी, डीआईजी भष्ट्राचार निरोधक ब्यूरो राजेन्द्र गोयल, पेसिफिक मेडिकल विव के चेयरपर्सन राहुल अग्रवाल, प्रीति अग्रवाल, वाइस चॉसलर डॉ. ए. पी. गुप्ता, पीएमसीएच के प्रिसिंपल डॉ. एम. एम. मंगल, न्यूरोसाइन्सेस विभाग के प्रोफेसर एवं हेड डॉ. अतुलाभ वाजपेयी, डॉ.मनीषा वाजपेयी एवं ब्रम्हाकुमारीज संस्था आबू पर्वत के कार्यकारी सचिव डॉ. मृत्युंजय ने किया।

सम्मलेन में राहुल अग्रवाल, डॉ. ए. पी. गुप्ता, सांई तिरूपति विवि के वाइस चॉसलर डॉ. जे. के छापरवाल, गौतम बुद्ध विवि नोएडा के पूर्व उपकुलपति डॉ. बी. पी. शर्मा, सीटीएई कॉलेज के डीन डॉ. पी. के. सिंह, आईआईएम उदयपुर के प्रोफेसर डॉ. सौरभ गुप्ता, स्कालर्स एरिना के डॉ. लोकेश जैन, एमएमपीएस के सीईओ संजय दत्ता, डीपीएस के संजय नरवानिया, माउण्ट लिटेरा स्कूल की प्राचार्य नैना चौवरे, संज्ञीतज्ञ डॉ. प्रेम भण्डारी एवं माउण्ट आबू स्थित ग्लोबल हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर के निदेशक डॉ. प्रताप मीढ़ा ने आधुनिक शिक्षा एवं शिक्षा नीति पर चर्चा की।

संचालन डॉ. आनन्द गुप्ता ने किया। कार्यक्रम में 1500 से ज्यादा लोगों की उपस्थिति रही।

विद्यापीठ के डबोक परिसर में डी फार्मा पाठ्यक्रम प्रारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि के डबोक परिसर में विद्यापीठ इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी का नवीन संकाय आगामी सत्र से शुरू हो रहा है। कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने बताया कि डबोक परिसर में डी फार्मा को प्रारंभ करने की स्वीकृति सम्बंधित विभाग पीसीआई से प्राप्त हो गई है। इसका ग्रामीण अंचल में रह रहे विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा जिससे वे स्वयं का व्यवसाय शुरू कर अन्य को भी रोजगार के अवसर प्रदान कर सकेंगे। प्रो. सारंगदेवोत ने बताया कि उक्त डिप्लोमा कोर्स प्रतापनगर एवं श्रमजीवी महाविद्यालय में भी संचालित किया जा रहा है। तीनों परिसरों के डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश प्रारंभ हो गये हैं।

सयाजी ग्रुप के लग्जीरियस होटल का शुभारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री के मशहूर ब्रांड, सयाजी होटल्स, ने उदयपुर में अपने पहले होटल के भव्य उद्घाटन की घोषणा की। 'एनराइज बाय सयाजी' लक्जरी, आराम और गर्मजोशी से भरे आतिथ्य का एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है।

सयाजी होटल्स के मैनेजिंग डायरेक्टर रऊफ धनानी ने कहा कि 'एनराइज बाय सयाजी' के 50 सुसज्जित कमरे मेहमानों को अद्भुत नजारे, शानदार सूर्यास्त और शहर के शोरगुल से दूर राहत देते हैं। 'एनराइज बाय सयाजी' के विशाल लॉन 25000 वर्गफीट और 45000 वर्गफीट में, और इसका शानदार बॉल-रूम 5000 वर्गफीट में फैला हुआ है, जो भव्य कार्यक्रमों और शादियों की मेजबानी के लिए बिल्कुल सही है। होटल में एक मल्टी-कुज़ीन रेस्तरां है जो मेहमानों के लिए स्वादिष्ट व्यंजनों की एक विस्तृत रेंज परोसने का वादा करता है। स्थानीय स्वादिष्ट राजस्थानी व्यंजनों से लेकर अंतर्राष्ट्रीय खानपान तक, 'एनराइज बाय सयाजी' का रेस्तरां हर तरह का ज़ायका पेश करता है जो हर मेहमान के स्वाद के अनुसार तृप्तिदायक आनंद देता है।

न्यू एनरिच्ड एचएफ डीलक्स सीरीज का अनावरण

उदयपुर (ह. सं.)। तकनीकी रूप से उन्नत और ईंधन-दक्ष उत्पादों का एक व्यापक पोर्टफोलियो उपलब्ध कराने का अपना वादा पूरा करते हुए, दुनिया में मोटरसाइकिलों और स्कूटर बनाने वाली सबसे बड़ी कंपनी, हीरो मोटोकॉर्प ने अपनी बेहद लोकप्रिय 100सीसी मोटरसाइकिल - एचएफ डीलक्स की आकर्षक नई रेंज लांच की।

हीरो मोटोकॉर्प के चीफ ग्रोथ ऑफिसर, रणजीवजीत सिंह ने कहा कि एचएफ डीलक्स के जबरदस्त आकर्षण में वृद्धि करते

हुए, चार नए स्ट्राइप्स इस मोटरसाइकिल के पूरे डाइनैमिक स्वरुप में चार चाँद लगाते हैं। साथ ही, कैनवास ब्लैक एडिशन अपनी बेहतर सुरक्षा और सुविधा के साथ ग्राहक की आकांक्षाओं को नई बुलंदियों पर ले जाती है। सेल्फ और सेल्फ वैरिएंट में ट्यूबलेस टायर्स जैसी मानक विशेषताओं के कारण ब्रैंड के उच्च मूल्य प्रस्ताव में वृद्धि होगी। इसमें सुविधा के लिए बतौर ऐक्सेसरी एक यूएसबी चार्जर लगाया गया है। एचएफ-डीलक्स देशभर में हीरो मोटोकॉर्प के शोरूम्स में उपलब्ध है। इसके किक वैरिएंट की कीमत 60,760/- रुपये और सेल्फ-वैरिएंट की कीमत 66,408/- रुपये है। एचएफ डीलक्स अपने परफॉरमेंस, ज्यादा ईंधन दक्षता, और स्थिर सवारी के कारण देश में सबसे भरोसेमंद मोटरसाइकिलों में से एक रही है।

एशियन फूड पॉप अप को लेकर वीकेंड पर दिखा भारी उत्साह

उदयपुर (ह. सं.)। ममेंटोज़ बाय आईटीसी होटल्स इकाया उदयपुर द्वारा आयोजित एशियन फूड पॉप अप में वीकेंड में उदयपुर के लोगों ने पैन एशियन एपिक्यूरियन का लुत्फ लिया। आईटीसी होटल्स की नई प्रॉपर्टी ने अपने ब्रांड के पहले एशियन फूड पॉप अप की मेजबानी की, जिसमें ऑथेंटिक पैन एशियन व्यंजनों की काफी वैरायटी देखने को मिली।

संदीपन बोस, जनरल मैनेजर, मेमेंटोज़, आईटीसी होटल्स इकायाने कहा कि नूडल्स मैस्ट्रो शेफ वांग पेंग ने मेमेंटोज़ उदयपुर में लोगों को एशियाई व्यंजनों के नए आयाम का अनुभव कराने के लिए पारंपरिक व्यंजनों के माध्यम से एशियाई स्वादों की एक सिम्फनी तैयार की। चीन के जियान क्षेत्र से आने वाले शेफ वांग सोंग हैंडमेड नूडल की वैरायटी बनाने में माहिर है, जैसे ला मियां (पूल्ड), दाओ झाओ मियां (कट), बियांगबियांग (स्ट्रेचड) आदि।

फूड पॉप अप में ट्रेडिशनल सॉस के साथ नूडल की कई किस्में परोसी गई। साथ ही अन्य स्वादिष्ट एशियाई व्यंजनों का भी लोगों ने स्वाद लिया, इनमें सोया और बर्न्ट गार्लिक के साथ स्टिर फ्राइड जैस्मिन राइस, माइक्रोग्रीन्स के साथ वोक टॉस्ड वेजिटेबल नूडल्स, हॉट गार्लिक सॉस में स्टिर फ्राइड वेजिटेबल्स, पैन फ्राइड टोफू और वेजिटेबल डंपलिंग्स, प्रॉन क्रिस्टल हर गाओ, स्टीम्ड मशरूम बन्स, बेल पेपर के साथ चेंगदू स्टाइल वोक सियर लैंब और स्कैलियन आदि शामिल थे।

एचडीएफसी : टू-व्हीलर लोन मेला 16 को

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के निजी क्षेत्र का अग्रणी एचडीएफसी बैंक 16 जून को मध्य भारत में एक बड़ा 'टू-व्हीलर लोन मेला' अभियान का आयोजन करने जा रहा है। राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में 250 से अधिक शाखाएँ इस अभियान में भाग लेगी, जहाँ टू व्हीलर डीलर शाखाओं पर मौजूद होंगे ताकि वे ग्राहकों को अपनी गाड़ियों का प्रदर्शन कर सकें। साथ ही बैंक अपने पात्र ग्राहकों को यहाँ जल्द से जल्द लोन प्रदान करेगा।

एचडीएफसी बैंक के 'टू-व्हीलर लोन मेला' अभियान का उद्देश्य है कि लोगों तक टू-व्हीलर फाइनेंस की पहुंच आसान हो सके। भाग लेने वाली शाखाओं में कुछ चयनित टू -व्हीलर और उनके इन्क्वायरी डेस्क होंगे। शाखाओं में आने वाले ग्राहक दोपहिया वाहनों की टेस्ट राइड ले सकते हैं और लोन विकल्प का चयन कर मौके पर ही अपने वाहन बुक करा सकते हैं। 31 मार्च 2023 तक, एचडीएफसी बैंक के दोपहिया लोन का बुक साइज 9,933 करोड़ रुपये था।

लाइजिंग लेजेंड्स, पेसमेकर, 7 लेजेंड्स एवं 22 याड्र्स बने सिरमौर

उदयपुर (ह. सं.)। फील्ड क्लब मैदान पर खेले जा रहे फील्ड क्लब कार्निवल का रविवार रात को चार वर्गों में खेले गए खिताबी मुकाबलों के साथ ही समापन हो गया। सात दिनों तक हर दिन की शाम से रात तक चले इस कार्निवल में रोमांच और हूटिंग पर विराम लग गया। खिताबी मुकाबलों में लाइजिंग लेजेंड्स, पेसमेकर, 7 लेजेंड्स एवं 22 याड्र्स अपने-अपने वर्ग में सिरमौर बने।

फील्ड क्लब के सचिव उमेश मनवानी ने बताया कि 50 साल से अधिक कैटेगरी वर्ग के पहले फाइनल में लाइटिंग लेजेंड्स ने जितेन्द्र नायर के आलराउंड खेल की बदौलत 24 रन से मुकाबला अपने नाम किया। नायर को मैन ऑफ द मैच चुना गया। क्लब उपाध्यक्ष राकेश चोर्डिया ने बताया कि महिला वर्ग के दूसरे फाइनल में पेसमेकर ने 38 रन से जीत दर्ज की। मैन ऑफ द मैच ह्दयांशीसिंह तंवर को चुना गया। 40 साल आयु वर्ग में तीसरा फाइनल खेला गया। इसमें 7 लेजेंडस ने 65 रन से जीत दर्ज की। मैन ऑफ द मैच पवन चावत को चुना गया। क्लब के अभिषेक कालरा, जितेंद्र वनवारिया और सुहैले अख्तर ने बताया कि अंडर 40 कैटेगरी वर्ग में खेले गए चौथे फाइनल में 22 याडर्स ने 64 रन से जीत दर्ज की।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि एसीबी के डीआईजी राजेंद्रप्रसाद गोयल, राजकुमार जैन आईएफएस एंड कंसरवेटर ऑफ उदयपुर, नगर निमम उपमहापौर पारस सिंघवी, अजीत जॉनी, गुरुप्रीतसिंह सोनी, यशवंत आंचलिया, सतेंद्रपालसिंह व टींकू छाबड़ा ने विजेता-उपविजेता रही टीमों को ट्राफिया प्रदान की, साथ ही विभिन्न मुकाबलों में मैन ऑफ द मैच रहे खिलाड़ियों पारितोषित प्रदान किए।

पीतल से पीतलिया.....

(पृष्ठ एक का शेष)

तुम अपनी दुकान के भंडार कक्ष में दरवाजे के सामने पर्दा लगा देना। पर्दे के पास बैठकर भंडार में बिना झांके पीतल निकालते रहना और कांठी पर तोलते रहना।' देवी माँ यह कह लुप्त हो गई ।

कोचरजी यथासमय दरबार हाजिर हुए। सभासदों के बीच खड़े होकर उन्होंने विनम्र भाव से दरबार को आमंत्रण दिया। उनकी निर्भय वाणी, अटूट विश्वास और गंभीर चुनौतीपूर्ण दमखम देख दरबारी स्तब्ध रह गये ।

देवी-माँ के कथनानुसार कोचरजी ने राणा की आवश्यकता और उम्मीद से अधिक पीतल तोलदी। यह दृश्य जितना महाराणा के लिए अजूबा था उतना ही कोचरजी के लिए कल्पनातीत था ।

उसी रात देवी माँ ने कोचरजी को स्वप्न दिया। कहा, 'मैं तुम्हारे परिवार की रक्षा करूंगी। मेरा नाम वरोठ माता है। तुम अपनी प्रथम संतान का नाम व अक्षर से रखना। पांच वर्ष की आयु तक बालक के झडुल्ये रखना और उसके बाद मेरे यहाँ आकर उनका मुंडन संस्कार करना।'

दूसरे दिन राणा ने कोचरजी को महलों में बुलाया । संकटकाल में उनके द्वारा प्रदत्त सहयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की । उन्हें पीतलिया सेठ के संबोधन से अलंकृत किया और पीतल का दाम स्वीकार करने का आग्रह किया। कोचरजी ने अत्यन्त ही विनयपूर्वक कहा - ' राजपरिवार की जैसी कृपा हमारे पुरखों पर रहती आई है वह आगे भी बनी रहे । देवी माँ वरोठ माता का ही यह प्रताप है कि मैं इस समय देश-सेवा के लिए अपना कर्त्तव्य अदा कर सका।' उन्होंने पीतल के बदले धन तो क्या कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया ।

महाराणा कुंभा को जब पता लगा कि कोचरजी का परिवार,पीतल का सामान्य व्यापारी है किन्तु देवी - माँ वरोठ की अखूट कृपा का ही यह परिणाम रहा है कि अपनी सामर्थ्य से कई गुना अधिक पीतल की व्यवस्था कर उन्होंने मेवाड़ के संकट को उबारा। इससे कोचरजी तो उनके अधिक स्नेहभाजन बने ही साथ ही वरोठ माता के प्रति भी उनकी अटूट श्रद्धा हुई।

इस श्रद्धा का ही यह परिणाम रहा कि महाराणा ने वास्तुविद् सूत्रधार मंडन के मार्गदर्शन में वरोठ माता का मंदिर बनवाया । संवत् 1512 में निर्मित यह भव्य मंदिर स्थापत्य एवं शिल्पकला की दृष्टि से अनूठा है। विशाल स्तंभों के सहारे निर्मित इस मंदिर का सभा मंडप पूर्व उत्तर और दक्षिण तीनों दिशाओं से खुला हुआ है।

महाराणा कुंभा द्वारा कोचरजी को दी गई पीतलिया सेठ की उपाधि इतनी फलीभूत हुई कि पीतलिया सेठ के रूप में ही उनकी पहचान हो गई और आगे जाकर पीतलिया उनकी गोत्र ही बन गई। आज तो पीतलिया गोत्र के देश के कोने-कोने में फैले हुए अपनी कीर्ति मंडित किये हुए हैं।

परम्परा से परिक्रमा.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

राम-शैय्या में राम-सीता निवास करते। रात्रि को शयन के दौरान लक्ष्मण अखण्ड अपलक पहरा देते। प्रसिद्धि है कि लक्ष्मण पर निद्रादेवी की बड़ी मेहर थी सो वे कभी सोये नहीं। जानकीकुण्ड में सीतामाई नित्य स्नान करती थीं।

पयस्विनी के किनारे अर्जुन वृक्षों की बहार देखते ही बनती है। उनकी सौंधी सुगंध और सुजलाती हवा सहस्त्र रोगों की रामबाण दवा कही जाती है। जंगल में नाना साधु अपनी कमर में डोरी की बांधनी के सहारे लंगोटी लिये साधनामग्न रहते हैं। उनकी जटाएं भी रस्सी-सी बुनावट लिए सिर पर सर्पाकार फनी देतीं बड़ी शोभायमान लगती हैं। उनका पूरा शरीर भस्मी से आवेष्ठित रहता है। उस बीच उनकी छोटी-छोटी आंखों की चमक जैसे अंधेरे में मणि-सी उज्वला प्रकाशमान बड़ी ही मोहक बनी लगती हैं। लंगोटी की यह रस्सी कोपिन कहलाती है।

डॉ. शर्मा ने बताया कि पयस्विनी के किनारे रामघाट पर यात्रियों के साथ साधु-सन्त भी स्नान का पुण्य अर्जित करते हैं। घाट पर स्थानार्थियों के तिलक करनेवाले मंगल आशीष देते सुखी जीवन की कामना करते हैं। बाबा लोग भी मेले के अवसर पर यहां दिखाई देते हैं।

कामदगिरि की परिक्रमा करते आदिवासियों के जत्थे-के-जत्थे अपने हाथों में लाठी लिये बड़े दमखम के साथ आगे बढ़ते हैं। यात्रा में विभिन्न तरह के यात्रियों की मौज-मस्ती की स्वच्छन्द बहार में अन्य लोकों के व्यक्ति भी मानव के विभिन्न भेष-रूप मिले सम्मिलित होते सुनेगये हैं। इनमें चोर-डाकू जैसे भी आस्थावान बने दिखाई देते हैं। कामदनाथ के दर्शन करते चने-केले का प्रसाद चढ़ाया जाता है। देव-दर्शन के साथ यात्रीगण पुजारी के भी धोक लगाते हैं। मार्ग में जगह-जगह मांगनेवालों की कतारें मिलती हैं जो यात्रियों से भांति-भांति की भेंटें प्राप्तकर खुशमिजाज बने रहते हैं।

कामदगिरि का कामदनाथ चौमुखी लिंगाकारी है। जैसे उदयपुर के निकट प्रसिद्ध तीर्थ एकलिंगनाथ की चौमुखी प्रतिमा है वैसे ही कामदनाथ भगवान चहुंदिशि अपना पराक्रम-प्रभाव लिये हैं। एकलिंगनाथ की तरह उनका पूर्व मुख विजय का, पश्चिम ज्ञान का, उत्तर लक्ष्मी का तथा दक्षिण मुख काल का प्रतीक कहा जाता है।

इस यात्रा में वे कामदगिरि भी होते हैं जिनका मनोरथ पूर्ण होने पर वे अपने घर से पेट के बल पथ नापते दण्डीयात्रा के रूप में निकलते हैं। उनके दोनों हाथों में पत्थर होते हैं।

पांवों से लेकर लम्बे फैले हाथ से जहां पत्थर धरा को स्पर्श करते हैं वहां से फिर दण्डवत होते ठेठ कामदनाथ की परिक्रमा कर अपना मनोरथ पूर्ण करते हैं। राह के बीच चलरहे यात्रियों के रेले ऐसे दण्डोतधारियों को बड़ी श्रद्धा सहित नमन कर रास्ता देते अपना सौभाग्य समझते हैं।

कामदगिरि पर्वतमाला अत्यन्त प्राचीन है जिसका उल्लेख रामायण में भी मिलता है। घने जंगलों से लकदक यह पर्वत धर्म और अध्यात्म का अजूबा दर्शन है। इसके चारोंओर परिक्रमा-पथ भी है पर लुकेछिपे यह भी सुनने में आता है कि पूरा पहाड़ ही भीतर से खोखला है मगर जाने के रास्ते किसी को ज्ञात नहीं हैं। इसका रहस्य मौन है। यह उन्हें दिखाई देता है जो पारदर्शी पवित्रता लिये होते हैं।

माना तो यह भी जाता है कि इसके भीतरी प्रकोष्ठ में एक प्रकाशवती झील है जिसकी चमक-दमक से आसपास का अंधेरा क्षेत्र सदैव प्रकाशवान बना रहता है। जिन उच्च आत्माधारी पुरुषों को इसका अदृश्य रास्ता दिखाई देता है वे और भी अनेक अलौकिक प्रसंग देख मन-ही-मन अपने को धनभागी समझते हैं। रामजीवन से जुड़े और भी अनेक प्रसंग यहां मिलते हैं। भरत मन्दिरस्थल राम-भरत-मिलाप को चरितार्थ करता है। चित्रकूट का हर कूट-कण विचित्र चित्रमय आलोक का अलौकिक दस्तावेज है।

गोस्वामी तुलसीदासजी पयस्विनी के किनारे सदैव चन्दन घिसते तथा वहां आते-जाते लोगों को तिलक लगाते। एकदिन वहां पीपल पर बैठे तोते के रूप में हनुमानजी ने उन्हें आगाह किया, 'जिन्हें तुम तिलक लगा रहे हो, वे बाल-स्वरूप राम-लक्ष्मण हैं।' यह कह तोते ने निम्नांकित दोहा उच्चरित किया जो आज भी जन-जन में सर्वाधिक लोकप्रिय है। वह दोहा है-

चित्रकूट के घाट पर, भयी संतन की भीर।
तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक देत रघुबीर।।

अजब-गजब

ए 2 बी के पी एस

बात सन् 1951-52 की है। छोटीसादड़ी का गोदावत जैन गुरुकुल उस समय दूर-दूर तक छात्रों के अध्ययन तथा छात्रावास के लिए सुपरिचित नाम था। उसमें सर्वाधिक छात्र मालवा-रतलाम के थे। हेडमास्टर नेमीचन्द सुराणा बड़े ही लोकप्रिय तथा आदर्श अध्यापक थे। अन्यों में राधामोहन पुरोहित सर्वाधिक लोकप्रिय रहे।

मैं स्थानीय छात्र था जो प्रतिदिन गांव से पढ़ने आता था। गुरुकुल गांव से थोड़ी दूरी लिए था। नवमीं-दसमीं के अध्ययन के दौरान रतलाम के पांच साथी जो मेरे सहपाठी थे, घनिष्टतम दोस्त थे। गुरुकुल के गृहपति नानालाल मट्ठा की अच्छी धाक थी। वे बहुत मेहनती तथा छात्रों की नियमित देखभाल करने वाले थे। अभिभावकों का उन पर बड़ा भरोसा था सो उन्हें सौंपकर निश्चिंत थे।

छोटीसादड़ी की रबड़ी तब बड़ी प्रसिद्ध थी। यह सबको मालूम नहीं था पर जो छात्र सम्पन्न थे वे गुरुकुल के भोजन से पूर्णत: संतुष्ट होते हुए भी उन्हें कभी-कभी रबड़ी खाने के सबड़के आते सो मैं उनका माध्यम बनता। मुझे वे पैसे दे देते। मैं छाने-चुपके उनकी चाह पूरी करता। पांचों साथी के साथ मैं भी गुरुकुल की सबसे ऊपरी चांदनी पर सबकी आंख चुराकर तृप्त होता।

एकदिन सभी ने मिलकर तै किया कि छहों साथियों का एक ऐसा सिक्रेट फोर्मूला बनायें जिसे हमारे सिवाय अन्य कोई नहीं समझ सके। वह फोर्मूला था- ए 2 बी के पी एस। ए स्क्वायर अर्थात् अमृत मुणोत, दूसरा अनोखी फिरोदिया, बी से मैं बनवारी जोशी, के से कान्तिचन्द लोढ़ा, पी से पारस नलवाया और एस से शान्ति चोरड़िया। इसका रहस्य अन्त तक कोई नहीं जान पाया।

स्मृति शेष अनोखी तथा पारस के अलावा मैं सभी दोस्तों से गाहेबगाहे आज भी सम्पर्क में हूं हालांकि सभी उम्र के पड़ाव पर हैं पर आपस में हलो-हाउ कर मोबाईल की तरह चार्ज हो खासा मनबहलाव करते हैं। **- बनवारीदत्त जोशी**

पहचान देते बाल

बचपन से ही मेरे बढ़े हुए बाल मेरी पहचान के प्रतीक बने हुए हैं पर कई लोगों को इनसे खीझ और चिढ़ भी रही। एकदिन कुछ मित्रों के बीच नन्द चतुर्वेदी ने मेरे बालों पर कटाक्ष करते कहा, 'महेन्द्र, इस भ्रम को निकाल दो कि बाल बढ़ाने से सब चीजें बढ़ जाती हैं।' मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

कुछ दिनों बाद आकाशवाणी उदयपुर केन्द्र से एक काव्यगोष्ठी का कार्यक्रम रखा गया। इसमें डॉ. प्रकाश आतुर, डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी, प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़, कमर मेवाड़ी, राजेन्द्र सक्सेना, डॉ. भगवतीलाल व्यास, किशन दाधीच ने भाग लिया। नन्दबाबू ने गोष्ठी का संचालन किया।

मैंने इस गोष्ठी में 'मैंने बाल बढ़ाये' शीर्षक से कविता पढ़ी जिसे बाद में मेरी कविता-पुस्तक 'कोई-कोई औरत' में सम्मिलित किया। उसके कुछ अंश हैं-

''एक विशिष्ट किस्म का मार्का बन गया हूं मैं अपने बालों को लेकर / भाई लोग बालों को भी एक जलवा मान रहे हैं / मैंने एक भ्रम पाल लिया है कि बाल बढ़ाने से हर चीज बढ़ जाती है / उन्हें क्या मालूम बिचारों को कि मेरे ये बाल कितनों के रसिया बालम हैं / न जाने कितनी छातियों पर स्वप्न बन सोते हैं / कितने नावक के तीर हैं ये / / कितने भंवर हैं ये जिन्होंने बांध दिये हैं चाहे अनचाहे फफकते फूलों को / इनके भांपन से न जाने कितनी पांखें जिंदी, बिंधी, नींदी, उनींदी हैं। उन्हें क्या मालूम बिचारों को / खाल उनकी खिंच गई है।'' इसके बाद किसी ने मेरे बालों पर कोई टिप्पणी नहीं की। **- म. भा.**

पुलिया का पुरुष

उस पुलिया से मेरा दिन में पांच-सात बार आना-जाना होता। भारी बरसात से उसके पास की जमीन दलदल हो गई। मैं उधर से गुजरी कि अचानक पांव उस माटी में धंसने लगे। मैं बाहर निकलने की बजाय भीतर उतरती रही। सारे प्रयत्न बेबस रहे। घुटनों तक पांव भीतर जैसे धंसते अंगद बने जा रहे। घबराई, चिल्लाई मगर कोई नजर नहीं आया।

अचानक उस पुलिया का ठेकेदार आया। मैं पहचान गई। बोला, 'बाईजी, आप तो प्रतिदिन ही यहां से आती-जाती हो।' 'हां भैय्या पर देखोन!' 'चिन्ता न करो' कहकर पता नहीं उसने क्या कला करी कि मैं फटाक-से बाहर निकल गई।

अपने को सम्भालती ज्योंही उसके प्रति आभार प्रकट करने देखा कि वह गायब हो गया। चारों ओर जहां तक दृष्टि गई, उसे निहारती रही पर कोई नजर नहीं आया।

आज भी जब मैं उस पुलिया से गुजरती हूं, सहज ही वह दृश्य तैरता लगता है। कोई अलौकिक चमत्कार ही था वह पर वह कौन था? **- डॉ. कहानी भानावत**

शब्द रंजन--- ज्ञान रंजन और बहु रंजन भी

शब्द रंजन केवल शब्दों का रंजन ही नहीं, सरस्वती का अनुरंजन भी है। इसमें आपकी बड़भागी आहुति इस रूप में भी हो सकती है। अपने प्रतिष्ठान तथा प्रियजनों की स्मृति निमित्त विज्ञापन सहयोग करें।

मुख पृष्ठ	10,000/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	7000/- रूपये
साधारण पृष्ठ	5000/- रूपये
आधा पृष्ठ	3000/- रूपये
चौथाई पृष्ठ	2000/- रूपये

सदस्यता शुल्क :

संरक्षक	11000/- रूपये
विशिष्ट सदस्य	5000/- रूपये
आजीवन सदस्य	3000/- रूपये
शब्द रंजन के सहयात्री	1500/- रूपये
साहित्यिक चौपाल	1000/- रूपये
वार्षिक संस्थागत	500/- रूपये
वार्षिक व्यक्तिगत	300/- रूपये

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908,
IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c

कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल से भेजें।
shabdranjanudr@gmail.com

यात्रावृत्त : बीकानेर में बारह दिन (4)

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

गंगाशहर में तेरापंथ सभाभवन में आचार्य तुलसी का वह कक्ष देखा जहां उन्होंने अन्तिम स्वांस ली। यहीं श्रेयांस मुनि और दो अन्य संतों के दर्शन हुए। यहां का अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ का मुख्य कार्यालय 'समता भवन' भी अपनी भव्यता की पहचान लिये है। यहीं से संघ का मुखपत्र 'श्रमणोपासक' निकलता है। अवकाश होने से हमारा किसी से मिलना नहीं हुआ।

डॉ. धर्मचन्द जैन से स्मरणीय चर्चा :

07 मार्च। डॉ. धर्मचन्दजी जैन सामान्य जनों में तो होम्योपैथी के डाक्टर के रूप में ही अधिक नाम लिये हैं पर साहित्यिकों में उनकी अच्छी पैठ है। उनके निवास पर उनके बैठकी कक्ष में होम्योपैथिक दवाइयों का सजावटी संकुल ही मिला मगर सबसे पहले हमें उनकी धर्मपत्नी, सुशिक्षित विदुषी बहू और सुपुत्र ही मिले जिनसे धीरे-धीरे बातों के सन्दर्भ निकले तो वे हमारे परिचितों के हम परिचित ही निकले।

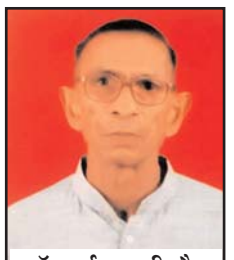
डॉ. धर्मचन्दजी जैन

राजसमन्द के देवेन्द्रजी कर्णावट की फेमिली से उनका सम्बन्ध होने से श्रीमती धर्मचन्द का उधर आना-जाना तथा रहना रहा सो देवेन्द्रजी का समय हमारे सबके लिए ही अतीतगामी अनेक यादों का स्मरणीय सेतु ही बना रहा। बहूरानी वहीं महारानी सुदर्शना कॉलेज में व्याख्याता हैं जहां पूर्व में डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल प्रिंसिपल रहीं जिन्होंने राजस्थानी लोकगीतों पर शोधग्रन्थ लिखा। वे प्रो. नरोत्तमदास स्वामी की शिष्या थीं।

स्वर्णलताजी के लिए स्वामीजी के कहने पर भारतीय लोककला मण्डल से हमने भी सामग्री चयन में हाथ बंटाया था। यह मेरा सुयोग ही रहा कि मैं भी एम. ए. में उदयपुर एम. बी. कॉलेज में स्वामीजी का छात्र बना और उन्होंने मुझे भी मेवाड़ के लोकगीतों पर पीएच.डी. करने को अपने निर्देशन में लिया था। उनकी मोतियों जैसी अति सुन्दर हस्तलिपि से बनी तब की सिनोप्सिस भी मेरे संग्रह में बड़े करीने से नजरबन्द है हालांकि बाद में मैंने राजस्थानी लोकनाट्यों की परम्परा में भीलों के गवरी नृत्य पर डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' के निर्देशन में उदयपुर विश्वविद्यालय से पीएच.डी. कर प्रथम शोधछात्र होने का गर्व महसूस किया था।

कोई आध घण्टे बाद डॉ. धर्मचन्दजी जैन से मुलाकात हुई तो दो घण्टे कैसे अनेक तरह की साहित्यिक और आपबीती घटनाओं के कहकहे में बीत गये, पता ही नहीं चला। डॉ. जैन विज्ञान क्षेत्र के प्राध्यापक रहते वाइस प्रिंसिपल डूंगर कॉलेज से सेवानिवृत्त हुए जहां 1958 में मैंने भी बी. ए. की पढ़ाई पूरी की। बीकानेर की साहित्यिक प्रवृत्तियों से जैन साहब का जमीनी जुड़ाव है। उनका सबसे महत्त्वपूर्ण स्थायी कार्य वहीं के निवासी रहे अमरचन्द बांठिया के सम्बन्ध का है जो स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम शहीद भामाशाह के रूप में हुए।

बीकानेर में 1793 में जन्में बांठिया परिवार का पुश्तैनी धंधा ग्वालियर में मोती आदि रत्नों के व्यापार का था। व्यापारिक सूझबूझ और विश्वसनीयता के कारण ग्वालियर राज्य द्वारा नगरसेठ की पदवी पाकर उस घराने के इतने घनिष्ठ हो गये कि ग्वालियर नरेश जयाजीराव ने अबीरचन्द बांठिया के आग्रह पर उनके पुत्र अमरचन्द बांठिया को अपने राजकोष 'गंगाजली' नामक समृद्ध खजाने का मुख्य कोषाध्यक्ष ही बना दिया।

वे अमरचन्द बांठियाजी ही थे जिन्होंने 18 जून 1858 को झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई की हत्या के बाद अंग्रेज सैनिक द्वारा उनका शव सुनसान जगह छोड़ दुर्दशा का शिकार होने से बचाया और चुपचाप एक झोंपड़ी में बिना किसी को भनक दिये अन्तिम संस्कार कर दिया किन्तु वे बच नहीं सके। गिरफ्तार हुए और देवी पद्मावती का इष्ट होने से वे दो बार तो फांसी के फंदे पर भी बचे निकले। देवी चमत्कार से पहलीबार टोपी बाजार के मोड़ पर पीपल के पुराने पेड़ पर उन्हें फांसी दी गई मगर पेड़ की डाल ही टूट गई। दूसरी बार श्रीनाथजी मन्दिर के पास नीम के पेड़ पर उन्हें लटकाया गया पर फांसी का फंदा ही टूट गया तब तीसरी बार बारहेदारी भवन के पास नीम के वृक्ष की मजबूत डाल पर उन्हें फांसी दी गई।

डॉ. धर्मचन्दजी ने अपने विद्वान साथी सुविचारक रतनचन्द जैन की सहायता से शहीद अमरचन्द बांठिया स्मृति प्रन्यास की स्थापना कराई जिसके प्रन्यासी बांठिया परिवार के संतोषकुमार, किशोरकुमार, सुमतिलाल तथा विजय बांठिया के साथ स्वयं धर्मचन्दजी संस्थापक प्रन्यासी हैं। इस अवसर पर प्रन्यास द्वारा रतनचन्द जैन और धर्मचन्दजी ने सन् 2022 में 24 पृष्ठीय पुस्तिका भी प्रकाशित की तथा डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी स्मृति मन्दिर मेडीकल कॉलेज चौराहा पर बीकानेर में अमरचन्द बांठिया की प्रतिमा भी स्थापित की।

इसी क्रम में जब मैंने उनसे जिक्र किया कि मैं सरकार द्वारा अमृत वर्ष पर स्वतंत्रता सेनानियों पर सारगर्भित जानकारी इकट्ठी कर रहा हूं। उसमें मैंने भी मेवाड़ क्षेत्र के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों पर लिखा है। यह सुनकर उन्होंने 'राजस्थान के जैन स्वतंत्रता सेनानी' पुस्तक ढूंढ़ निकाली जो उदयपुर के ही मदनलाल बोकड़िया द्वारा लिखी गई है। मुझे पहलीबार ही इसका 2012 में प्रकाशित द्वितीय संस्करण देखने को मिला तो बड़ा अचरज ही हुआ। मैंने कहा भी कि यहां दीया तले अंधेरा कहावत सिद्ध हुई है पर अच्छा यह रहा कि पुस्तक में संकलित 176 में से लगभग 40 स्वतंत्रता सेनानियों से मेरा निजी परिचय-सम्पर्क रहा और उनमें से बहुतेरे स्वतंत्रता सेनानियों पर मैंने लिखा भी।

हमारी इस भेंट का जिक्र डॉ. धर्मचन्दजी ने भुवनेश्वर में रह रहे रतनचन्दजी से किया तभी तो दूसरे ही दिन उन्होंने मुझे फोन पर कहा कि वहां अन्यों के साथ सांखला से अवश्य मिलूं। सांखलाजी ने अपने सांखला प्रिंटिंग प्रेस से अनेक सुन्दर प्रकाशन दिये हैं। वह समय था जब जयपुर का जयपुर प्रिंटिंग प्रेस अपनी प्रामाणिक तथा भरोसेमन्द श्रेष्ठ छपाई के लिए जाना जाता था। उसके बाद यहां के सांखला प्रिंटिंग प्रेस ने बड़ा नाम कमाया।

हम सांखलाजी से भेंट करने उनके प्रेस पहुंचे। पहलीबार ही मेरी उनसे भेंट हुई किन्तु वे मेरे लेखन की दृष्टि से भलीभांति परिचित थे। बड़ी आत्मीयता से अनेक नामचीन मसिजीवियों के सम्बन्ध में हमारी अनेक जानकारियों से लकदक बातें होती रहीं। उन्होंने बताया कि कोरोनाकाल में वे भी उसकी लपेटी में रहे। धीरे-धीरे उनके सहयोगी साथी भी नहीं रहने के कारण उन्होंने प्रिंटिंग कार्य को बहुत सीमित कर लिया है। वे किंचित अस्वस्थ होते हुए भी इतनी देर तक हमसे आत्मीयता के गंभीर माहौल में रू-ब-रू होते विदा के वक्त बार-बार मना करने पर भी ठेठ आम पथ तक हमें विदा करने आये। यह उनका लेखकीय सरोकारों से जुड़ा शालीन बड़प्पन ही कहा जायगा जो मेरे स्मृतिकोश का 'दोस्ती सांखला' नामित सुहाना सिक्का ही बन गया।

लूणकरणजी छाजेड़ के सामाजिकी सरोकार :

तेरापंथ धर्मसंघ के मोतबीर श्रावक लूणकरण छाजेड़ अच्छे पत्रकार, सुविज्ञ विचारक एवं सुधि साहित्यकार हैं। आचार्य तुलसी, महाप्रज्ञ एवं महाश्रमण; तीनों आचार्यों का सान्निध्य एवं उनका स्नेहाशीष छाजेड़जी को

डॉ. भानावत को 'दलितों के मसीहा आचार्य तुलसी' पुस्तक भेंट करते लूणकरण छाजेड़। पास में खड़े हैं डॉ. सतीश-डॉ. कविता मेहता

अन्यतम उपलब्धि-गाथा है। तुलसी जन्म शताब्दी पर 2014 में इनकी लिखी 'दलितों के मसीहा आचार्य तुलसी' पुस्तक सर्वाधिक चर्चा में रही। बचपन से ही इस धर्मसंघ से मेरा साहित्यिक जुड़ाव भी छाजेड़जी जैसा ही रहने के कारण बड़ी देर तक हमारी अनेकों सन्दर्भों में अतीतजीवी आपबीती बातें बड़ी सुखद रहीं।

'दलितों के मसीहा आचार्य तुलसी' पुस्तक मुझे भी भेंट स्वरूप मिली जिसमें छाजेड़जी ने उस अणुव्रत अधिवेशन का जिक्र किया जो 1973 में बरदासर नामक एक छोटे से दलित समाज के लोगों के गांव में किया। इसमें गुलजारीलाल नंदा, जयसुखलाल हाथी, जैनेन्द्रकुमार, यशपाल, मानव मुनि, मोहनसिंह मेहता, रिखबराज कर्णावट जैसे प्रख्यात नेता, साहित्यकार, समाजसेवी के अलावा भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर से प्रख्यात कलाविज्ञ देवीलाल सामर के साथ मैं तथा कुछ कठपुतली कलाकार भी सम्मिलित हुए।

आचार्य तुलसी के ग्यारह अंकी जादू :

छाजेड़जी ने बताया कि ग्यारह अंक आचार्य तुलसी को बहुत पला-फला। ग्यारह की उम्र में उन्होंने दीक्षा ली। ग्यारह वर्ष बाद आचार्य बने। दीक्षा के बाद पहली पदयात्रा 11 किलोमीटर की रही। 83 वर्ष की लम्बी उम्र ली। इसमें भी 8+3 का जोड़ ग्यारह रहा और उम्र से 1100 गुणा अधिक किलोमीटर की पदयात्रा भी उनकी उपलब्धि बनी।

यही नहीं, उनके समय कुल 911 साधु-साध्वी दीक्षित हुए। वे पहले आचार्य थे जिनका 61 वर्ष का आचार्यकाल रहा। उन्होंने परम्परा से हट अपने हाथों से युवाचार्य और आचार्य पद दिया। अपनी माता को भी दीक्षा दी। ये सब अनहोनी ऐतिहासिक घटनाएं हैं। अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन भी अद्भुत घटना है। ग्यारह का अंक उनके लिए जादुई प्रभाव लिये रहा।

बरदासर में अखिल भारतीय अणुव्रत समिति का सामरजी को अध्यक्ष और मुझे सदस्य बनाया गया। महामंत्री देवेन्द्र कर्णावटजी ने ही बखूबी यह सब किया जो हमारे से भलीभांति परिचित थे। वहीं हमने कठपुतली नाटिका के प्रदर्शन दिये जो सर्वाधिक सराहे गये। फिर तो सामरजी ने अणुव्रत की विचारधारा के अनुकूल पुतली नाटिकाओं की देशभर में प्रदर्शनों की झड़ी लगादी।

मल्हम वाले डॉ. रामदेव :

09 मार्च। रामदेव जैन कॉलेज में डॉ. सतीशजी के शिष्य रह चुके हैं। वे पिछले 47 वर्ष से, जब 11 वर्ष के थे तब से ही जले हुओं का अपनी विशिष्ट मल्हम से अपने निवास पर निशुल्क इलाज कर रहे हैं। यह सेवा-कार्य उनमें संस्कारजनित है। सतीशजी ने कोई तीन दशक पूर्व उनसे मेरा परिचय कराया तब मैंने उन पर विविध पत्र-पत्रिकाओं में खूब लिखा। आकाशवाणी पर भी उनकी इस महनीय सेवा की चर्चा की और उनका भी साक्षात्कार करवाया। इससे निश्चय ही उनकी पहचान बढ़ी और उन्हें और अधिक अच्छे भाव से रोगियों की सेवा करने का यश मिला।

इसबार जब सतीशजी ने फोन किया तो वे दो बार मिलने आये और फिर अपने नये निवास पर भी ले गये जहां उनकी पत्नी कविता और पुत्री जो वेटेरीनरी कॉलेज में पढ़ रही है तथा पुत्र से भी मिलना हुआ। लगभग डेढ़ घण्टे के दौरान रामदेव ने जले हुए उन अनेक व्यक्तियों का जिक्र किया जो लाइलाज घोषित करने पर उनसे इलाज पाकर ठीक हुए। कुछ से मेरी बात भी करवाई। उनमें से कुछेक का विवरण इस प्रकार है-

पाली जिले के रायपुर गांव के बाबूलाल (70) को किसी जहरीले जानवर के काटने से पांव का हिस्सा बुरी तरह जख्मी हो गया। उन्होंने जोधपुर के मथुरादास तथा गांधी हॉस्पिटल में बहुत इलाज कराया। यहां तक कि डाक्टर ने ऑपेरशन कर दूसरे पांव की चमड़ी हटाकर जख्मी वाले पांव पर लगा दी पर कोई आराम नहीं पड़ा। प्लास्टिक सर्जन डॉ. रजनी गाल्वा ने तो स्पष्ट ही संकेत दे दिया कि बचने के चांसेज कम हैं।

डॉ. महेंद्र भानावत एवं रामदेव अग्रवाल

स्थिति यहां तक आगई कि बाबूलालजी को दोनों हाथों में लकड़ी का सहारा लिए डग भरने को विवश होना पड़ा। उनके पुत्र कैलाश ने बताया कि बाबूजी के बचने की कोई उम्मीद नहीं पाकर स्वाभाविक था हमें निराशा के अलावा कोई उपाय नहीं सूझ रहा था पर जिसे जीवित रहना है, कोई अदृश्य शक्ति किसी-न-किसी के माध्यम से उसका सहारा बनती है सो हमारे साथ भी यही हुआ।

किसी ने बीकानेर से मल्हम का हवाला दिया। जोधपुर, जायपुर वालों ने भी हमें बताया कि बीकानेर में इसका इलाज होता है तो किसी ने हमें रामदेवजी के नम्बर दिये। उनसे बात की। उन्होंने शर्तिया इलाज से ठीक होने का कहा तो हमारी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। हमने उनके मार्गदर्शन में मल्हम-पट्टी करना शुरू किया तो महीने भर में ही हमें उसका प्रभाव देखने को मिला। अब आशातीत संतोष है। वाकर से चलते हैं पर ठीक हो जायेंगे।

बीकानेर के रतनजी नागर (70) के अनुसार उनकी तीन वर्षीया पुत्री ऋतु नागर गर्म दूध की कढ़ाई में गिर गई जिससे बुरी तरह घायल हो गई। घटना 35 वर्ष पुरानी है। तब डॉ. खत्री ने कोई जगह नहीं बचने पर नस काटकर ड्रीप चढ़ाई। बचने की कोई आश नहीं रही। डाक्टरों ने जवाब दे दिया तब डॉ. सोनी जो अक्सर उनके वहां आते-जाते रहे, उन्होंने डॉ. रामदेव की मल्हम के लिए कहा। वे अपनी पत्नी के साथ आये और मल्हम की 15-20 ट्यूब दे गये। तब रामदेवजी के बड़ेरे बुलाकीजी थे। उन्होंने एक पैसा नहीं लिया। ऋतु नागर विवाहित है। आगरा में उसकी साड़ी की फेक्ट्री है। सब तरह से रामजी राजी हैं।

देशनोक निवासी हाल नोएडा में रह रहे शुभकरणजी भूरा (73) के पांव में गेंगरीन होने से डाक्टरों ने पांव काटने को कहा। अपोलो में इलाज चला। पांवों की थोड़ी-थोड़ी अंगुलियां काटनी पड़ीं। पांच-छह माह में मल्हम से ठीक हो गये। उनका लड़का प्रवीण भी मल्हम से इलाज करने की सेवा-भावना लिए है।

रामदेव का परिवार जितेन्द्रजी- डॉ. सतीश मेहता के साथ

रामदेव ने बताया कि 23 दिसम्बर 1993 में डबवाली में हुए भयंकर अग्निकाण्ड में तत्काल ही 500 व्यक्ति मृत्यु के ग्रास बने और फिर 200 और चल बसे। तब बीकानेर के कलेक्टर सुबोधजी अग्रवाल ने रामदेव को भेजा। रामदेव अपने 10 साथियों सहित वहां पहुंचे और 40 दिन रहकर 130 व्यक्तियों का संतोषजनक इलाज किया। उनमें कई मरीज लुधियाना, चंडीगढ़, दिल्ली के भी थे।

इससे प्रभावित हो अपनी गुरुआनी भुवनेश्वरी देवीजी की प्रेरणा से पवनकुमार गर्ग ने 1995 में रामदेव के पास आकर मल्हम से इलाज करने का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया और मंडीडब में इलाज प्रारम्भ किया जो अद्यावधि चालू है। इनकी देखादेखी उनका लड़का भी इलाज करने लग गया।

इसीप्रकार दिल्ली में अशोक छाजेड़ गत 10 वर्ष से इलाज कर रहा है। अशोक बीकानेर का रहने वाला है। उसके पिता कैलाशजी ने कोई तीन माह रामदेव के पास रहकर इलाज की प्रक्रिया समझते व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। अशोक ने बताया कि दुर्गा मन्दिर के पास शास्त्रीनगर में इलाज नियमित है। वर्ष में लगभग दो हजार रोगी ठीक हो रहे हैं। करीब 35 किलो मरहम खर्च होती है। पट्टी मरीज से मंगवाई जाती है। शेष सारा इलाज निशुल्क होता है। इससे बड़ी आत्मतुष्टि मिलती है और सभी तरह से सेवाभाव की मेवा भी ईश्वर ने दे रखी है।

रामदेव स्वयं भी जब-जब भी मल्हम द्वारा रोगियों के इलाज की बात करते हैं तो उनके मुख से यही निकलता है कि बिना किसी इच्छा-तमन्ना के जो सेवाभाव से आत्मतुष्टि मिलती है उसका बखान नहीं किया जा सकता और ईश्वर इतना महरबान है कि मैं कुछ नहीं था पर अब उसकी कृपा से नया आलीशान भवन बन गया है और 'शिव शक्ति' नाम से एक मल्हम बनाने की फेक्ट्री भी लगा दी गई है जहां नहीं कुछ मुनाफा लिए वाजीब कीमत पर ट्यूब उपलब्ध कराई जाती है।

रामदेव ने बताया कि मल्हम का यह प्रभाव रहता है कि जले हुए का 95 प्रतिशत तक इलाज होकर मरीज स्वस्थ होता है जो मौत के मुंह से बचा हुआ मानता है फिर इस मल्हम से जले हुए का कहीं भी कोई चिन्ह नहीं रह पाता है। इसके प्रभाव में आकर बड़ी-बड़ी कम्पनियों ने हमसे सम्पर्क किया मगर उन्हें मुनाफा देने और हमें मुनाफा कमाने की कोई मंशा नहीं रहने के कारण हमने किसी से कोई समझौता नहीं किया।

-क्रमशः

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।